bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –38 अगस्त प्रथम अंक – 01

वर्तमान कमल ज्योति

वन्देमातरम्

मेरी माटी, मेरा देश

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

₹20

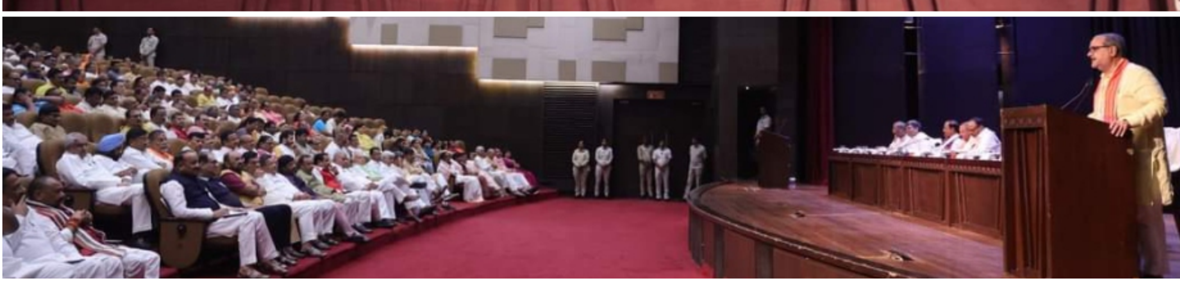

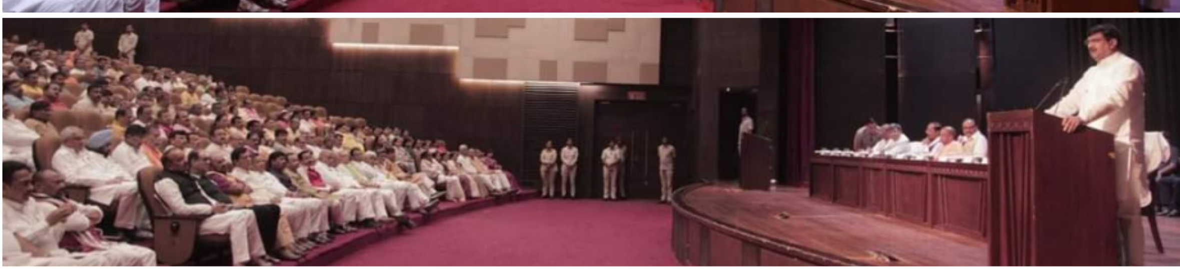

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनायें

सम्पादकीय

जन विश्वास पर अविश्वास ?

विपक्षी गठबंधन ने लोकसभा में मोदी सरकार को बदनाम करने के लिये अविश्वास प्रस्ताव का सहारा लिया। उसका आकलन था विपक्षी गठजोड़ का नया नाम इंडिया भी चर्चित होगा। सरकार पर दबाब बनेगा। जनता में संदेश जाएगा। विपक्षी इंडिया का विकल्प के रूप में विकास होगा। लेकिन अविश्वास के इस अस्त्र का उल्टा असर हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आपदा को अवसर में बदल अविश्वास को जन विश्वास का अवसर बना दिया। गत दिनों सत्ता व संगठन ने नौ वर्ष की उपलब्धियां लोगों तक पहुंचाई थी। अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से सरकार को लोकसभा में अपनी उप्लब्धियों के उल्लेख का अवसर मिला। विपक्ष के समक्ष शांति के साथ इसको सुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अविश्वास प्रस्ताव उसी ने दिया था। सत्ता पक्ष ने उनके सभी सवालों का जबाब दिया। नरेंद्र मोदी ने मॉनसून सत्र में पारित हुए लोक कल्याणकारी विधेयकों का उल्लेख किया। विपक्ष हंगामा करता रहा। विधेयकों पर विचार नहीं किया। विपक्ष ने जनता के साथ विश्वासघात किया है। इन्हें जनता की नहीं सत्ता की भूख है। इन्होंने जनता को निराश किया है। लोक कल्याण के विधेयकों का विपक्ष ने बहिष्कार किया। लेकिन अविश्वास प्रस्ताव पर सभी आ गए। मतलब साफ है इन्हें केवल राजनीति और सत्ता से मतलब है। दुनिया में भारत का महत्व बढ़ा है। नौ साल में करीब चौदह करोड़ लोग गरीबी रेखा के उपर आए हैं। आईएमएफ ने कहा कि भारत में अति गरीबी का निवारण हुआ है। स्वच्छ भारत अभियान से चार लाख से अधिक लोगों का जीवन बचाना सम्भव हुआ। भारत की उपलब्धियों पर विपक्ष का अविश्वास है। मणिपुर के मुद्दे पर भी विपक्ष का मंसूबा पूरा नहीं हुआ। यूपीए सरकार के घोटाले गिनाये गए। अमित शाह ने कहा कि बारह लाख करोड़ रुपये से अधिक के घोटाले हुए।

यूपीए सरकार तेल उत्पादक देशों व कम्पनियों का कई लाख करोड़ रुपये का कर्ज छोड़ गई थी। इसकी भरपाई भी वर्तमान सरकार को करनी पड़ रही है। इन नौ वर्षों में अनेक संवेदनशील समस्याओं का समाधान हुआ। यह सभी नरेंद्र मोदी सरकार के कारण ही संभव हुआ। अनुच्छेद–370 और 35ए का विरोध करना भी साम्प्रदायिकता माना जाता था। सेक्युलर दिखने के लिए इन अलगाववादी प्रावधानों का समर्थन जरूरी था। इसके हटने पर गम्भीर परिणाम की चेतावनी तक दी गई। लेकिन नरेंद्र मोदी सरकार ने इसको हटा कर ही दम लिया।

सरकार का प्रत्येक निर्णय लोक कल्याण व राष्ट्रीय हित के अनुरूप है। प्रधानमंत्री मोदी ने दशकों से लंबित फैसलों को लागू किया। कोरोना के बाद अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाना दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। मगर भारत की अर्थव्यवस्था अब भी विकास की राह पर है। बीस लाख करोड़ रुपये के आत्मनिर्भर भारत पैकेज के सहारे भारत की विकास यात्रा को नई गति मिली है तथा देश आत्मनिर्भरता की राह पर बढ़ा है।आजादी के बाद सात दशकों में देश के केवल साढ़े तीन करोड़ ग्रामीण घरों में ही पानी के कनेक्शन थे। लेकिन नरेंद्र मोदी के शासन में साढ़े चार करोड़ घरों को साफ पानी कनेक्शन दिए गए हैं। दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना आयुष्मान लागू की गई। इसके दायरे में पचास करोड़ लोग हैं।नौ सालों में भारत ने डिजिटल लेनदेन में दुनिया को नई दिशा दिखाने का काम किया है। रिकॉर्ड सैटेलाइट प्रक्षेपित किये जा रहे हैं। रिकॉर्ड सड़कें बनाई जा हैं। दशकों से लंबित अनेक योजनाएं पूरी की गई हैं। अनेक पुराने विवाद भी पूरी शांति और सौहार्द से सुलझाए गए हैं।कोरोना काल में अस्सी करोड़ लोगों को निशुल्क राशन की व्यवस्था की गई। मोदी सरकार अब तक देशी–विदेशी करीब तीन सौ सेटेलाईट लॉन्च कर चुकी है। नरेंद्र मोदी सरकार ने चालीस करोड़ लोगों के जनधन खाते खुलवाए। पहले ये लोग बैंकिंग सेवा से वंचित थे। आयुष्मान, उज्ज्वला और निर्धन आवास योजनाएं संचालित की गई। देश खुले में शौच से मुक्त हो गया। राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री रहते हुए कहा था कि सरकारी योजनाओं के एक रुपये में से केवल पन्द्रह पैसा ही गरीबों तक पहुंचता है। समाधान नरेंद्र मोदी ने किया है। आज सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ सीधे लोगों के खातों में पहुंच रहा है। इस तरह के अनेक बदलावों की कहानी नरेंद्र मोदी के नौ सालों के कार्यकाल में लिखी गई है। यूपीए के समय बिजली आएगी, अभी आ गई, गैस कनेक्शन मिलेगा, अभी मिल गया, वाटर कनेक्शन मिलेगा, अभी मिल गया। अविश्वास प्रस्ताव के विपक्षी हमले के मूल में मणिपुर प्रकरण के कारण नार्थईस्ट में कॉंग्रेस सरकार द्वारा किये गये भेद–भाव, कुशासन की पोल पट्टी भी जनता के सामने आ गयी। अविश्वास प्रस्ताव के कारण मोदी सरकार के प्रति जनता का विश्वास और पुष्ट हुआ है।

जनता के आर्शिवाद से भव्य विजय के साथ भाजपा की वापसी

संसद के मानसून सत्र में विपक्ष द्वारा मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया जिसके कारण सरकार ने विपक्ष को निरूत्तर करते हुए विश्वास मत प्राप्त किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबके सवालों के जवाब देते हुए कहा कि 2018 में भी ये ईश्वर का ही आदेश था, जब विपक्ष के मेरे साथी अविश्वास प्रस्ताव लेकर के आए थे। उस समय भी मैंने कहा था कि अविश्वास प्रस्ताव हमारी सरकार को फ्लोर टेस्ट नहीं है, मैंने उस दिन कहा था। बल्कि ये उन्हीं का फ्लोर टेस्ट है, ये मैंने उस दिन भी कहा था। और हुआ भी वही जब मतदान हुआ, तो विपक्ष के पास जितने वोट थे, उतने वोट भी वो जमा नहीं कर पाए थे। और इतना ही नहीं जब हम सब जनता के पास गए तो जनता ने भी पूरी ताकत के साथ इनके लिए नो कॉन्फिडेंस घोषित कर दिया। और चुनाव में एनडीए को भी ज्यादा सीटें मिलीं और भाजपा को भी ज्यादा सीटें मिलीं। यानि एक तरह से विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव हमारे लिए शुभ होता है, और मैं आज देख रहा हूं कि आपने तय कर लिया है कि एनडीए और बीजेपी 2024 के चुनाव में पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़कर के भव्य विजय के साथ जनता के आशीर्वाद से वापस आएगी।

नार्थईस्ट के विकास को पहली प्राथमिकता

विपक्ष के प्रस्ताव पर यहां तीन दिनों से अलग–अलग विषयों पर काफी चर्चा हुई है। अच्छा होता कि सत्र की शुरुआत के बाद से ही विपक्ष ने गंभीरता के साथ सदन की कार्यवाही में हिस्सा लिया होता। बीते दिनों इसी सदन ने और हमारे दोनों सदन ने जनविश्वास बिल, मेडिएशन बिल, डेन्टल कमीशन बिल, आदिवासियों के लिए जुड़े हुए बिल, डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन बिल, नेशनल रिसर्च फाउंडेशन बिल, कोस्टल एक्वा कल्चर से जुड़ा बिल, ऐसे कई महत्वपूर्ण बिल यहां पारित किए हैं। और ये ऐसे बिल थे जो हमारे फिशरमैन के हक के लिए थे, और उसका सबसे ज्यादा लाभ केरल को होना था और केरल के सांसदों से ज्यादा अपेक्षा थी। क्योंकि वो ऐसे बिल पर तो अच्छे ढंग से हिस्सा लेते हैं। लेकिन राजनीति उन पर ऐसी हावी हो चुकी है कि उनको फिशरमैन की चिंता नहीं है।

यहां नेशनल रिसर्च फाउंडेशन का बिल था। देश की युवा शक्ति के आशा आकांक्षाओं के लिए एक नई दिशा देने वाला बिल था। हिन्दुस्तान को एक साइंस पावर के रूप में भारत कैसे उभरे, वैसे एक दीर्घ दृष्टि के साथ सोचा गया था, उससे भी आपका इतराज। डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन बिल ये बिल अपने आप में देश के युवाओं के जज्बे में जो बात आज प्रमुखता से है, उससे जुड़ा हुआ था। आने वाला समय टेक्नोलॉजी ड्रिवेन है। आज डाटा को एक प्रकार से सेकंड ऑयल के रूप में, सेकंड गोल्ड के रूप में माना जाता है, उस पर कितनी गंभीर चर्चा की जरूरत थी। लेकिन राजनीति आपके लिए प्राथमिकता थी। कई ऐसे बिल थे, जो गांव के लिए, गरीब के लिए, दलित के लिए, पिछड़ों के लिए, आदिवासी के लिए उनके कल्याण की चर्चा करने के लिए थे। उनके भविष्य के साथ जुड़े हुए थे। लेकिन इसमें इन्हें कोई रूचि नहीं है। देश की जनता ने जिस काम के लिए उनको यहां भेजा है, उस जनता का भी विश्वासघात किया गया है।

इस अविश्वास प्रस्ताव में कुछ चीजें तो ऐसी विचित्र नजर आई जो न तो पहले कभी सुना है, न देखा है, न कभी कल्पना की है। सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता का बोलने की सूची में नाम ही नहीं था। और पिछले उदाहरण देखिए आप। 1999 में वाजपेयी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया। शरद पवार साहब उस समय नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने डिबेट का नेतृत्व किया। 2003 में अटल जी की सरकार थी, सोनिया जी विपक्ष की नेता थी, उन्होंने लीड ली, उन्होंने विस्तार से अविश्वास प्रस्ताव रखा। 2018 में खड़गे जी थे, विपक्ष के नेता। उन्होंने प्रोमिनेंटली विषय को आगे बढ़ाया। लेकिन इस बार अधीर बाबू का क्या हाल हो गया, उनकी पार्टी ने उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया, ये तो कल अमित भाई ने बहुत–बहुत जिम्मेदारी के साथ कहा कि भाई अच्छा नहीं लग रहा है। और आपकी उदारता थी कि उनका समय समाप्त हो गया था, तो भी आपने उनको आज मौका दिया। लेकिन गुड़ का गोबर कैसे करना, उसमें ये माहिर हैं। मैं नहीं जानता हूं कि आखिर आपकी मजबूरी क्या है? 2014 में 30 साल के बाद देश की जनता ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई और 2019 में भी उस ट्रैक रिकॉर्ड को देखकर के उनके सपनों को संजोने का सामर्थ्य कहां है, उनके संकल्पों को सिद्ध करने की ताकत कहां पड़ी है, वो देश भली–भांति पहचान गया है। और इसलिए 2019 में फिर एक बार हम सबको सेवा करने का मौका दिया और अधिक मजबूती के साथ दिया।

इस सदन में बैठक प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वो भारत के युवाओं के सपनों को, उनकी महत्वाकांक्षाओं को, उनकी आशा अपेक्षा के मुताबिक, वो जो काम करना चाहता है, उसके लिए हम उसे अवसर दें। सरकार में रहते हुए हमने भी इस दायित्व को निभाने का भरपूर प्रयास किया है। हमने भारत के युवाओं को घोटालों से रहित सरकार दी है। हमने भारत के युवाओं को, आज के हमारे प्रोफेशनल्स को खुले आसमान में उड़ने के लिए हौसला दिया है, अवसर दिया है। हमने दुनिया में भारत की बिगड़ी हुई साख उसको भी संभाला है और उसे फिर एक बार नई ऊंचाइयों पर ले गए हैं। अभी भी कुछ लोग कोशिश कर रहे हैं कि दुनिया में हमारी साख को दाग लग जाए, लेकिन दुनिया अब देश को जान चुकी है, दुनिया के भविष्य में भारत की किस प्रकार से योगदान दे सकता है, ये विश्व का विश्वास बढ़ता चला जा रहा है, हमारे ऊपर।

हमारे विपक्ष के मित्रों की फितरत में ही अविश्वास भरा पडा है। हमने लाल किले से स्वच्छ भारत अभियान का आह्वान किया। लेकिन उन्होंने हमेशा अविश्वास जताया। कैसे हो सकता है? जो गांधी जी भी आकर गए, कह करके गए क्या हुआ? अभी स्वच्छता कैसे हो सकती है? अविश्वास भरी हुई इनकी सोच है। हमने मां–बेटी को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए, उस मजबूरी से मुक्त होने के लिए शौचालय जैसी जरूरत पर जोर दिया और तब ये कह रहे हैं, क्या लाल किले से ऐसे विषय बोले जाते हैं? क्या ये देश की प्राथमिकता होती है क्या? हमने जब जन–धन खाते खोलने की बात की, तब भी यही बात निराशा की। क्या होता है जन–धन खाता? उनके हाथ में पैसे कहां है? उनका जेब में क्या पड़ा है? क्या लेके आएंगे, क्या करेंगे? हमने योग की बात की, हमने आयुर्वेद की बात

की, हमने उसको बढ़ावा देने की बात की तो उसका भी माखौल उड़ाया गया। हमने स्टॉर्ट–अप इंडिया की चर्चा की, तो उन्होंने उसके लिए भी निराशा फैलाई। स्टॉर्ट–अप तो कोई हो ही नही सकता है। हमने डिजिटल इंडिया की बात कही, तो बड़े–बड़े विद्वान लोगों ने क्या भाषण दिए। हिन्दुस्तान के लोग तो अनपढ़ हैं, हिन्दुस्तान के लोगों को तो मोबाइल चलाना भी नहीं आता है। हिन्दुस्तान के लोग कहां से डिजिटल करेंगे? आज डिजिटल इंडिया में देश आगे है। हमने मेक इन इंडिया की बात कही। जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया। जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया।

कांग्रेस पार्टी और उनके दोस्तों का इतिहास रहा है कि उन्हें भारत पर भारत के सामर्थ्य पर कभी भी भरोसा नही रहा है।

देश के कोटि–कोटि नागरिकों ने भारत के वैक्सीन पर विश्वास जताया। इनको भारत के सामर्थ्य पर विश्वास नहीं है। इनको भारत के लोगों पर विश्वास नहीं है। लेकिन इस सदन को मैं बताना चाहता हूं। इस देश का भी भारत के लोगों का कांग्रेस के प्रति No Confidence का भाव बहुत गहरा है। कांग्रेस अपने घमंड में इतनी चूर हो गई है, इतनी भर गई है कि उसको जमीन दिखाई तक देती नहीं है।

भेष बदल कर धोखा देने की कोशिश करने वालों की हकीकत सामने आ ही जाती है। जिन्हें सिर्फ नाम का सहारा है, उन्हीं के लिए कहा गया है

"दूर युद्ध से भागते, दूर युद्ध से भागते नाम रखा रणधीर,
भाग्यचंद की आज तक, सो है तकदीर'',

इनकी मुसीबत ऐसी है कि खुद को जिंदा रखने के लिए, इनको NDA का ही सहारा लेना पड़ा है। लेकिन आदत के मुताबिक घमंड का जो I है ना I वो उनको छोड़ता नहीं है। और इसलिए एनडीए में दो I पिरो दिये। दो घमंड के I पिरो दिये। पहला I छब्बीस दलों का घमंड और दूसरा I एक परिवार का घमंड। एनडीए भी चुरा लिया, कुछ बचने के लिए और इंडिया के भी टुकड़े कर दिये I.N.D.I.A.

जरा हमारे डीएमके के भाई सुन लें, जरा कांग्रेस के लोग भी सुन लें। अध्यक्ष महोदय, यूपीए को लगता है कि देश के नाम का इस्तेमाल करके अपनी विश्वसनीयता बढ़ाई जा सकती है। लेकिन कांग्रेस के सहयोगी दल कांग्रेस के अटूट साथी तमिलनाडु सरकार में एक मंत्री, दो दिन पहले ही ये कहा है, तमिलनाडु सरकार के एक मंत्री ने कहा है I.N.D.I.A. उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। I.N.D.I.A. उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। उनके मुताबिक तमिलनाडु तो भारत में है ही नहीं।

अपनी कमियों को ढकने के लिए चुनाव चिन्ह और विचारों को भी चुरा लिया, फिर भी जो बदलाव हुए हैं, उसमें पार्टी का घमंड ही दिखता है। ये भी दिखता है कि 2014 से वो किस तरह Denial के Mode में है। पार्टी के संस्थापक कौन ऐ.ओ. ह्यूम एक विदेशी थे, जिन्होंने पार्टी बनाई। आप जानते हैं 1920 में भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई ऊर्जा मिली। 1920 में एक नया ध्वेज मिला और देश ने उस ध्वज को अपना लिया तो रातों–रात कांग्रेस ने उस ध्वज की ताकत को देखकर के उसे भी छीन लिया और प्रतीक को देखा कि ये गाड़ी चलाने के लिए ठीक रहेगा, 1920 से ये खेल चल रहा है जी और उनको लगा कि वो तिरंगा झंडा देखेंगे तो लोग देखेंगे कि उनकी ही बात हो रही है। ये उन्होंने खेल किया। वोटरों को भुनाने के लिए गांधी नाम भी। हर बार वो भी चुरा लिया। कांग्रेस के चुनाव चिह्न देखिए दो बैल, गाय बछड़ा और फिर हाथ का पंजा, ये सारे उनके कारनामे उनके हर प्रकार के मनोवृत्ति का प्रतिबिंब करता है, उसको प्रकट करते हैं और ये साफ दिखाता है कि सब कुछ एक परिवार के हाथों में सब केंद्रित हो चुका है।

ये I.N.D.I.A. गठबंधन नहीं है, ये I.N.D.I.A. गठबंधन नहीं है, एक घमंडिया गठबंधन है। और इसकी बारात में हर कोई दूल्हा बनना चाहता है। सबको प्रधानमंत्री बनना है।

इस गठबंधन ने ये भी नहीं सोचा है कि किस राज्य में आपके साथ आप किसके साथ कहां पहुंचे हैं? पश्चिम बंगाल में आप टीएमसी और कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ हैं। और दिल्लीा में एक साथ हैं। और अधीर बाबू 1991 पश्चिम बंगाल विधानसभा का चुनाव इन्हीं कम्युनिस्ट पार्टी ने अधीर बाबू के साथ क्या व्यवहार किया था, वो आज भी इतिहास में दर्ज है। खैर 1991 की बात तो अब पुरानी है, पिछले साल केरल के

वायनाड में जिन लोगों ने कांग्रेस के कार्यालय में तोड़फोड़ की, ये लोग उनके साथ दोस्ती करके बैठे हैं। बाहर से तो ये अपना, बाहर से तो अपना लेबल बदल सकते हैं, लेकिन पुराने पापों का क्या होगा? ये ही पाप आपको लेके डूबेंगे। आप जनता जनार्दन से ये पाप कैसे छुपा पाओगे? आप नहीं छुपा सकते हो और इनको आज जो हालत है, इसलिए मैं कहना चाहता हूं,

अभी हालात ऐसे हैं, अभी हालात ऐसे हैं,
इसलिए हाथों में हाथ,
जहां हालात तो बदले, फिर छुरियां भी निकलेंगी।

ये घमंडिया गठबंधन देश में परिवारवाद की राजनीति का सबसे बड़ा प्रतिबिंब है। देश के स्वाधीनता सेनानियों ने, हमारे संविधान निर्माताओं ने हमेशा परिवारवादी राजनीति का विरोध किया था। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबा साहब अंबेडकर, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, मौलाना आजाद, गोपीनाथ बोरदोलोई, लोकनाथ जयप्रकाश, डॉक्टर लोहिया, आप जितने भी नाम देखेंगे सबने परिवारवाद की खुलकर आलोचना की है, क्योंकि परिवारवाद का नुकसान देश के सामान्य नागरिक को उठाना पड़ता है। परिवारवाद सामान्यई नागरिक के, उसके हकों, उसके अधिकारों से वंचित हैं, इसलिए इन विभूतियों ने हमेशा इस बात पर बहुत जोर दिया था कि देश को परिवार, नाम और पैसे पर आधारित व्यववस्था़ से हटना ही होगा, लेकिन कांग्रेस को हमेशा ये बात पसंद नहीं आई।

इनका मोदी प्रेम तो इतना जबरदस्त है जी, चौबीसों घंटे सपने में भी उनको मोदी आता है। मोदी अगर भाषण करते समय बीच में पानी पिएं तो वे कहते हैं अगर पानी भी पिया तो सीना तानकर इधर देखिए– मोदी को पानी पिला दिया। अगर मैं गर्मी में, कड़ी धूप में भी जनता–जनार्दन के दर्शन के लिए चल पड़ता हूं, कभी पसीना पोंछता हूं तो कहते हैं देखिए, मोदी को पसीना ला दिया। देखिए, इनका जीने का सहारा देखिए। एक गीत की पंक्ति हैं–

डूबने वाले को तिनके का सहारा ही बहुत,
दिल बहल जाए फकत, इतना इशारा ही बहुत।
इतने पर भी आसमां वाला गिरा दे बिजलियां,
को बतला दे जरा डूबता फिर क्या करे।

मैं कांग्रेस की मुसीबत समझता हूं। बरसों से एक ही फेल प्रोडक्ट उसको बार–बार लॉन्च करते हैं। हर बार लॉन्चिंग फेल हो जाती है। और अब उसका नतीजा ये हुआ है, मतदाताओं के प्रति उनकी नफरत भी सातवें आसमान पर पहुंच गई है। उनका लॉन्चिंग फेल होता है, नफरत जनता पर करते हैं। लेकिन पीआर वाले प्रचार क्या करते है

ये कभी भारत को टॉप 3 अर्थव्यवस्था बनाने की गारंटी नहीं दे सकते। ये मोदी देश को गारंटी देता है कि मेरे तीसरे कार्यकाल में मैं हिन्दुथस्तान को टॉप 3 की पोजीशन में ला के रखूंगा, ये मेरी देश को गारंटी है। ये कभी भी देश को विकसित बनाने का सोच भी नहीं सकते हैं। उस दिशा में ये लोग कुछ कर भी नहीं सकते हैं।

आदरणीय लोकतंत्र में जिनका भरोसा नहीं होता है वो सुनाने के लिए तो तैयार होते हैं लेकिन सुनने का धैर्य नहीं होता है। अपशब्द बोलो भाग जाओ, कूड़ा कचरा फैंकों भाग जाओ, झूठ फैलाओ भाग जाओ, यही जिनका खेल है। ये देश इनसे अपेक्षा ज्यादा नहीं कर सकता है। अगर इन्होंने गृह मंत्री जी की मणिपुर की चर्चा पर सहमति दिखाई होती तो अकेले मणिपुर विषय पर विस्तार से चर्चा हो सकती थी। हर पहलू पर चर्चा हो सकती थी। और उनको भी बहुत कुछ कहने का मौका मिल सकता था। लेकिन उनको चर्चा में रस नहीं था और कल अमित भाई ने विस्तार से इस विषय की चीजें जब रखी तो देश को भी आश्चर्य हुआ है कि ये लोग इतना झूठ फैला सकते हैं। ऐसे–ऐसे पाप करके गए हैं लोग और वे आज जब अविश्वास का प्रस्ताव लाए और अविश्वास पर सारे विषय पर वो बोले तो ट्रेजरी बेंच का भी दायित्व बनता है कि देश के विश्वास को प्रकट करे, देश के विश्वास को नई ताकत दें, देश के प्रति अविश्वास करने वालों के लिए करारा जवाब दें, ये हमारा भी दायित्व बनता है। हमने कहा था, अकेले मणिपुर के लिए आओ चर्चा करो, गृहमंत्री जी ने चिट्ठी लिखकर के कहा था। उनके विभाग से जुड़ा विषय था। लेकिन साहस नहीं था, इरादा नहीं था और पेट में पाप था, दर्द पेट में हो रहा था और फोड़ रहे थे सर, इसका ये परिणाम था।

मणिपुर की स्थिति पर देश के गृह मंत्री श्रीमान अमित

शाह ने कल दो घंटे तक विस्तार से और बड़े धैर्य से रत्ती भर भी राजनीति के बिना सारे विषय को विस्तार से समझाया, सरकार की और देश की चिंता को प्रकट किया और उसमें देश की जनता को जागरूक करने का भी प्रयास था। उसमे इस पूरे सदन की तरफ से एक विश्वास का संदेश मणिपुर को पहुंचाने का इरादा था। उसमें जन सामान्य को शिक्षित करने का भी प्रयास था। एक नेक ईमानदारी से देश की भलाई के लिए और मणिपुर की समस्या के लिए रास्ते खोजना एक प्रयास था। लेकिन सिवाय राजनीति के कुछ करना नहीं है, इसलिए इन्होंने यही खेल किए , यही स्थिरता की।

कल वैसे तो विस्तार से अमित भाई ने बताया है। मणिपुर में अदालत का एक फैसला आया। अब अदालतों में क्या हो रहा है वो हम जानते हैं। और उसके पक्ष विपक्ष में जो परिस्थितियों बनीं, हिंसा का दौर शुरू हो गया और उसमें बहुत परिवारों को मुश्किल हुई। अनेकों ने अपने स्वजन भी खोएं। महिलाओं के साथ गंभीर अपराध हुआ और ये अपराध अक्षम्य है और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकार मिलकर के भरपूर प्रयास कर रही है। और मैं देश के सभी नागरिकों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि जिस प्रकार से प्रयास चल रहे हैं निकट भविष्य में शांति का सूरज जरूर उगेगा। मणिपुर फिर एक बार नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगा। मैं मणिपुर के लोगों से भी आग्रह पूर्वक कहना चाहता हूं, वहां की माताओं–बहनों, बेटियों से कहना चाहता हूं देश आपके साथ है, ये सदन आपके साथ है। हम सब मिलकर के कोई यहां हो या ना हो, हम सब मिलकर के इस चुनौती का समाधान निकालेंगे, वहां फिर से शांति की स्थापना होगी। मैं मणिपुर के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि मणिपुर फिर विकास की राह पर तेज गति से आगे बढ़े उसमें कोई प्रयासों में कोई कसर नहीं रहेगी।

यहां सदन में मां भारती के बारे में जो कहा गया है, उसने हर भारतीय की भावना को गहरी ठेस पहुंचाई है। अध्यक्ष जी पता नहीं मुझे क्या हो गया है। सत्ता के बिना ऐसा हाल किसी का हो जाता है क्या? सत्ता सुख के बिना जी नहीं सकते हैं क्या? और क्या क्या भाषा बोल रहे हैं।

पता नहीं क्यों कुछ लोग भारत मां की मृत्यु की कामना करते नजर आ रहे हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। ये वो लोग हैं जो कभी लोकतंत्र की हत्या की बात करते हैं, कभी संविधान की हत्या की बात करते हैं। दरअसल जो इनके मन में है, वही उनके कृतित्व में सामने आ जाता है। मैं हैरान हूं और ये बोलने वाले कौन लोग हैं? क्या ये देश भूल गया है ये 14 अगस्त विभाजन विभीषिका, पीड़ा दायक दिवस आज भी हमारे सामने उन चीख को लेकर के, उन दर्द को लेकर के आता है। ये वो लोग जिन्होंने मां भारती के तीन–तीन टुकड़े कर दिए। जब मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना था, जब मां भारती की जंजीरों को तोड़ना था, बेड़ियों को काटना था, तब इन लोगों ने मां भारती की भुजाएं काट दीं। मां भारती के तीन–तीन टुकड़े कर दिए और ये लोग किस मुंह से ऐसा बोलने की हिम्मत करते हैं।

ये वो लोग हैं जिस वंदे मातरम् गीत ने देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी थी। हिन्दुस्तान के हर कोने में वंदे मातरम चेतना का स्वर बन गया था। तुष्टिकरण की राजनीति के चलते उन्होंने मां भारती के ही टुकड़े किए इतना नहीं, वंदे मातरम गीत के भी टुकड़े कर दिए इन लोगों ने। ये वो लोग हैं माननीय अध्यक्ष जी जो भारत तेरे टुकड़े होंगे ये गैंग ये नारा लगाने वाले लोग, इनको बढ़ावा देने के लिए, उनका प्रोत्साहन करने के लिए पहुंच जाते हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे उनको बढ़ावा दे रहे हैं। ये उन लोगों की मदद कर रहे हैं जो ये कहते हैं कि सिलीगुड़ी के पास जो छोटा सा नॉर्थ ईस्ट को जोड़ने वाला कॉरिडोर है, उसको काट दें तो बिल्कुल नॉर्थ ईस्ट अलग हो जाएगा। ये सपना देखने वालों का जो लोग समर्थन करते हैं।

मैं तीन प्रसंग आपके सामने रखना चाहता हूं सदन के सामने। और बड़े गर्व के साथ कहना चाहता हूं, देशवासी भी सुन रहे हैं। पहली घटना 5 मार्च, 1966– इस दिन कांग्रेस ने मिजोरम में असहाय नागरिकों पर अपनी वायुसेना के माध्यम से हमला करवाया था। और वहां गंभीर विवाद हुआ था। कांग्रेस वाले जवाब दें क्या वो किसी दूसरे देश की वायुसेना थी क्या। क्या

मिजोरम के लोग मेरे देश के नागरिक नहीं थे क्या। क्या उनकी सुरक्षा ये भारत सरकार की जिम्मेदारी थी कि नहीं थी। 5 मार्च, 1966– वायुसेना से हमला करवाया गया, निर्दोष नागरिकों पर हमला करवाया गया।

आज भी मिजोरम में 5 मार्च को आज भी पूरा मिजोरम शोक मनाता है। उस दर्द को मिजोरम भूल नहीं पा रहा है। कभी इन्होंने मरहम लगाने की कोशिश नहीं की, घाव भरने का प्रयास तक नहीं किया है। कभी उनको इसका दुख नहीं हुआ है। और कांग्रेस ने इस सच को देश के सामने छुपाया है दोस्तों। ये सत्य देश से इन्होंने छिपाया है। क्या अपने ही देश में वायुसेना से हमला करवाना, कौन था उस समय– इंदिरा गांधी। अकाल तख्त पर हमला हुआ, ये तो अभी भी हमारी स्मृति में है, उनको मिजोरम में उससे पहले ये आदत लग गई थी। और इसलिए अकाल तख्त पर हमला करने तक वो पहुंचे थे मेरे ही देश में, और यहां हमें उपदेश दे रहे हैं।

नॉर्थ–ईस्ट में वहां के लोगों के विश्वास की इन्होंने हत्या की है। वो घाव किसी न किसी समस्या के रूप में उभर करके आते हैं, उन्हीं के कारनामे हैं।

मैं दूसरी घटना का वर्णन करना चाहता हूं और वो घटना है 1962 का वो खौफनाक रेडियो प्रसारण आज भी शूल की तरह नार्थ ईस्ट के लोगों को चुभ रहा है। पंडित नेहरू ने 1962 में जब देश के ऊपर चाइना का हमला चल रहा था, देश के हर कोने में लोग अपनी रक्षा के लिए भारत से अपेक्षा करके बैठे थे, उनको कोई मदद मिलेगी, उनकी जान–माल की रक्षा होगी, देश बच जाएगा। लोग अपने हाथों से लड़ाई लड़ने के लिए मैदान में उतरे हुए थे, ऐसी विकटर घड़ी में दिल्ली के शासन पर बैठे हुए और उस समय पर एकमात्र जो नेता हुआ करते थे, पंडित नेहरू ने रेडियो पर क्या कहा था– उन्होंने कहा था, My heart goes out to the people of Assam- ये हाल करके रखा था उन्होंने। वो प्रसारण आज भी असम के लोगों के लिए एक नश्तर की तरह चुभता रहता है। और किस प्रकार से उस समय नेहरू जी ने उन्हें अपने भाग्य पर छोड़ जीने के लिए मजबूर कर दिया था। ये हमसे हिसाब मांग रहे हैं।

यहां से चले गए लोहियावादी। उन्हें भी मैं सुनाना चाहता था, जो लोग अपने–आप को लोहिया जी का वारिस कहते हैं और जो कल सदन में बड़े उछल–उछल करके बोल रहे थे, हाथ लंबे–चौड़े करने की कोशिश कर रहे थे। लोहिया जी ने नेहरू जी पर गंभीर आरोप लगाया था। और लोहिया जी ने कहा था और वो आरोप था कि जान–बूझकर नेहरू जी नॉर्थ–ईस्ट का विकास नहीं कर रहे थे, जान–बूझ करके नहीं कर रहे थे। और लोहिया जी के शब्द थे– ये कितनी लापरवाही वाली और कितनी खतरनाक बात है– लोहिया जी के शब्द– हैं, ये कितनी लापरवाही वाली और कितनी खतरनाक बात है 30 हजार स्क्वॉयर मील से बड़े क्षेत्र को एक कोल्ड स्टोरेज में बंद करके उसे हर तरह के विकास से वंचित कर दिया गया है। ये लोहिया जी ने नेहरू पर आरोप लगाया था कि नॉर्थ–ईस्ट के लिए तुम्हारा रवैया क्या है, ये कहा था। नॉर्थ–ईस्ट के लोगों के हृदय को, उनकी भावनाओं को आपने कभी समझने की कोशिश नहीं की है। मेरे मंत्री परिषद के 400 मंत्री रात्रि निवास करके वो अकेले स्टेट हेड क्वार्टर में नहीं, डिस्ट्रिक हेड क्वार्टर के तौर पर। और मैं स्वयं 50 बार गया हूँ। ये आंकड़ा नहीं है सिर्फ, ये साधना है। ये नॉर्थ–ईस्ट के प्रति समर्पण है।

पिछले कई वर्षों का इतिहास देख लीजिए। नॉर्थ–ईस्ट में उनका ये रवैया था, लेकिन अब देखिए मैं पिछले 9 साल के मेरे प्रयासों से कहता हूं कि हमारे लिए नॉर्थ–ईस्ट हमारे जिगर का टुकड़ा है। आज मणिपुर की समस्याओं को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है, जैसे बीते कुछ समय में ही वहां यह परिस्थिति पैदा हुई हो। कल अमित भाई ने विस्तार से बताया है समस्यां क्या है, कैसे हुआ है। लेकिन मैं आज बड़ी गंभीरता से कहना चाहता हूं नॉर्थ ईस्ट की इन समस्यााओं की कोई जननी है तो जननी एकमात्र कांग्रेस है। नॉर्थ ईस्टस के लोग इसके लिए जिम्मेदार नहीं है, इनकी यह राजनीति जिम्मेदार है।

भारतीय संस्कारों से ओत–प्रोत मणिपुर, भाव भक्ति की स्मृद्धि की विरासत वाला मणिपुर, स्वतंत्रता संग्राम और आजाद हिंद फौज, अनगिनत बलिदान देने वाला मणिपुर। कांग्रेस के शासन में ऐसा महान हमारा भूभाग

अलगाव की आग में बलि चढ़ गया था। आखिर क्यों? आप सबको भी मैं याद दिलाना चाहता हूं साथियों, यहां जो मेरे नॉर्थ–ईस्ट के भाई हैं उनको हर चीज का पता है। जब मणिपुर में, वो एक समय था हर व्यवस्था उग्रवादी संगठनों की मर्जी से चलती थी, वो जो कहे वो होता था, और उस समय सरकार किसकी थी मणिपुर में? कांग्रेस की, किसकी सरकार थी – कांग्रेस। जब सरकारी दफ्तरों में महात्मा गांधी की फोटो नहीं लगाने दी जाती थी, तब सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब मोरांग में आजाद हिंद फौज के संग्रहालय पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर बम फेंका गया, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब मणिपुर में स्कूलों में राष्ट्रगान नहीं होने देंगे, यह निर्णय किये जाते थे, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब अभियान एक अभियान चला था, अभियान चला करके लाइब्रेरी में रखी गई किताबों को जलाने का इस देश की अमूल्यं ज्ञान की विरासत को जलाते समय सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब मणिपुर में मंदिर की घंटी शाम को चार बजे बंद हो जाती थी, ताले लग जाते थे, पूजा–अर्चना करना बड़ा मुश्किल हो जाता था, सेना का पहरा लगाना पड़ता था, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस।

जब इम्फाल के इस्कॉन मंदिर पर बम फेंक कर श्रद्धालुओं की जान ले ली गई थी तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब अफसर, हाल देखिए, आईएएस, आईपीएस अफसर उनको अगर वहां काम करना है तो उनकी तनख्वांह का एक हिस्सा उनको इन उग्रवादी लोगों को देना पड़ता था। तब जा करके वो रह पाते थे, तब सरकार किसकी थी? कांग्रेस।

इनकी पीड़ा सिलेक्टिव है, इनकी संवेदना सिलेक्टिव है। इनका दायरा राजनीति से शुरू होता है और राजनीति से आगे बढ़ता है। वे राजनीति के दायरे से बाहर थे, न मानवता के लिए सोच सकते हैं, न देश के लिए सोच सकते हैं, न ही देश की इन कठिनाइयों के लिए सोच सकते हैं। उनको सिर्फ राजनीति के सिवा कुछ सूझता नहीं है।

मणिपुर में जो सरकार है और पिछले छह साल से इन समस्याएओं का समाधान ढूंढने के लिए लगातार समर्पित भाव से कोशिश कर रही है। बंद और ब्लॉकेट का जमाना कोई भूल नहीं सकता है। मणिपुर में आये दिन बंद और ब्लॉकेट होता था। वो आज बीते दिन की बात हो चुकी है। शांति स्थापना के लिए हरेक को साथ लेकर चलने के लिए एक विश्वास जगाने का प्रयास निरंतर हो रहा है, आगे भी होगा। और जितना ज्यादा हम राजनीति को दूर रखेंगे, उतनी शांति निकट आएगी। यह मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं।

हमारे लिए नॉर्थ–ईस्ट आज भले हमें दूर लगता हो, लेकिन जिस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया का विकास हो रहा है, जिस प्रकार आसियान देशों का महत्व बढ़ रहा है, वो दिन दूर नहीं होगा, हमारे ईस्ट की प्रगति के साथ–साथ नॉर्थ–ईस्ट वैश्विक दृष्टि से सेंटर प्वाइंट बनने वाला है। और मैं यह देख रहा हूं, और इसलिए मैं पूरी ताकत से आज नॉर्थ–ईस्ट की प्रगति के लिए कर रहा हूं, वोट के लिए नहीं कर रहा हूं जी। मुझे मालूम है कि करवट लेते हुए विश्व की नई संरचना किस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया और आसियान की कंट्री के लिए प्रभाव पैदा करने वाली है और नॉर्थ–ईस्ट का क्या महत्व बढ़ने वाला है और न नॉर्थ–ईस्ट का गौरव गान फिर से कैसे शुरू होने वाला है, वो मैं देख सकता हूं और इसलिए मैं लगा हुआ हूँ।

और इसलिए हमारी सरकार ने नॉर्थ–ईस्ट के विकास को पहली प्राथमिकता दी है। पिछले नौ वर्षों में लाखों करोड़ रुपये नॉर्थ–ईस्टर की इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमने लगाये हैं। आज आधुनिक हाईवे, आधुनिक रेलवे, आधुनिक नए एयरपोर्ट यह नॉर्थ–ईस्ट् की पहचान बन रहे हैं। आज पहली बार अगरतला रेल कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार मणिपुर में गुड्स ट्रेन पहुंची है। पहली बार नॉर्थ–ईस्ट में वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेन चली है। पहली बार अरुणाचल प्रदेश में ग्रीन फील्डर एयरपोर्ट बना है। पहली बार अरुणाचल में सिक्किम जैसे राज्य एयर कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार वाटर वे के जरिये पूर्वोत्तर इंटरनेशनल ट्रेड का गेटवे बना है। पहली बार नॉर्थ–ईस्ट में एम्स जैसा मेडिकल संस्थान खुला है।

पहली बार मणिपुर में देश की पहली स्पोयर्ट यूनिवर्सिटी खुल रही है। पहली बार मिजोरम में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मॉस कम्युनिकेशन जैसे संस्थाप खुल रहे हैं। पहली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में नॉर्थ–ईस्ट की इतनी भागीदारी बढ़ी है। पहली बार नागालैंड से एक महिला सांसद राज्यसभा में पहुंची है। पहली बार इतनी बड़ी संख्या में नॉर्थ–ईस्ट के लोगों को पद्म पुरस्कालर से सम्मानित किया गया है। पहली बार पूर्वोत्तर से लचित बोरफुकन जैसे नायक की झांकी गणतंत्र दिवस में शामिल हुई है। पहली बार मणिपुर में रानी गाइदिन्ल्यू के नाम पर पूर्वोत्तर का पहला ट्राइबल फ्रीडम फाइटर म्यूजियम बना है।

हम जब सबका साथ, सबका विकास कहते हैं, यह हमारे लिए नारा नहीं, यह हमारे शब्द नहीं है। यह हमारे लिए आर्टिकल ऑफ फेथ है। हमारे लिए कमिटमेंट है और हम देश के लिए निकले हुए लोग हैं। हमने तो कभी जीवन में सोचा ही नहीं था कि कभी ऐसी जगह आ करके बैठने का सौभाग्य मिलेगा। लेकिन यह देश की जनता की कृपा है कि उसने हमें अवसर दिया है तो मैं देश की जनता को विश्वास दिलाता हूं –

शरीर का कण–कण, समय का पल–पल सिर्फ और सिर्फ देशवासियों के लिए है, मैं अपने विपक्ष के साथियों की एक बात के लिए आज तारीफ करना चाहता हूं। क्योंकि वैसे तो वो सदन के नेता को नेता मानने के लिए तैयार नहीं है। मेरे किसी भाषण को उन्होंने होने नहीं दिया है, लेकिन मुझमें धैर्य भी है, सहनशक्ति भी है और झेल भी लेता हूं और वो थक भी जाते हैं।

आज का भारत न दबाव में आता है, न दबाव को मानता है। आज का भारत न झुकता है, आज का भारत न थकता है, आज का भारत न रुकता है। समृद्ध विरासत विश्वास ले करके, संकल्प ले करके चलिए और यही कारण है जब देश का सामान्य मानवी देश पर विश्वास करने लगता है तो दुनिया को भी हिन्दुस्तान पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है। आज चूंकि दुनिया का विश्वास भारत के प्रति बना है उसका एक कारण भारत के लोगों का खुद पर विश्वास बढ़ा है। यह सामर्थ्य है, कृपा करके इस विश्वास को तोड़ने की कोशिश मत कीजिए। मौका आया है देश को आगे ले जाने का, समझ नहीं सकते हो तो चुप रहो। इंतजार करो, लेकिन देश के विश्वास को विश्वासघात करके तोड़ने की कोशिश मत करो।

बीते वर्षों में विकसित भारत की मजबूत नींव रखने में हम सफल हुए और सपना लिया है 2047 जब देश आजादी के 100 वर्ष मनाएगा, आजादी के 75 वर्ष पूरे होते ही अमृतकाल शुरू हुआ है। और अमृतकाल के प्रारंभिक वर्षों में है तब इस विश्वास के साथ मैं कहता हूं जो नींव आज मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है, उस नींव की ताकत है कि 2047 में हिन्दुसस्तोन विकसित हिन्दुंस्ताझन होगा, भारत विकसित भारत होगा साथियों। और यह देशवासियों के परिश्रम से होगा, देशवासियों के विश्वांस से होगा, देशवासियों के संकल्पश से होगा, देशवासियों की सामूहिक शक्ति से होगा, देशवासियों की अखंड पुरुषार्थ से होने वाला है यह मेरा विश्वांस है।

हो सकता है, यहां जो बोला जाता है वो रिकॉर्ड के लिए तो शब्द चले जाएंगे, लेकिन इतिहास हमारे कर्मों को देखने वाला है, जिन कर्मों से एक समृद्ध भारत का सपना साकार करने के लिए एक मजबूत नींव का कालखंड रहा है, उस रूप में देखा जाएगा। इस विश्वास के साथ आदरणीय अध्यक्ष जी, आज सदन के सामने मैं कुछ बातें स्पूष्ट ता पूर्वक करने के लिए आया था और मैंने बहुत मन पर संयम रख करके उनके हर अपशब्दों पर हंसते हुए, अपने मन को खराब न करते हुए 140 करोड़ देशवासियों को उनके सपनों और संकल्पों को अपनी नजर के सामने रख करके मैं चल रहा हूं, मेरे मन में यही है। और मैं सदन के साथियों से आग्रह करूंगा, आप समय को पहचानिए, साथ मिल करके चलिए। इस देश में मणिपुर से गंभीर समस्या पहले भी आई हैं, लेकिन हमने मिलकर के रास्ते निकाले हैं, आओ मिल करके चलें, मणिपुर के लोगों को विश्वास दे करके चलें, राजनीति का खेल करने के लिए मणिपुर की भूमिका का कम से कम दुरूपयोग न करे। वहां जो हुआ है, वो दुःखपूर्ण है। लेकिन उस दर्द को समझ करके दर्द की दवाई बन करके काम करे यही हमारा रास्ता होना चाहिए।

सरकार अपने अन्नदाता किसान के साथ : योगी

यूपी विधानमंडल के मानसून सत्र के आखिरी दिन शुक्रवार को सीएम योगी जी ने 2 घंटे 34 मिनट के भाषण में सभी विपक्षियों के प्रश्नों का उत्तर दिया।

योगी जी ने शुरुआत दुष्यंत कुमार की लाइन से की। कहा– तुम्हारे पांव के नीचे कोई जमीन नहीं...कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।

सदन में सीएम योगी ने कहा– शिवपाल जी आपकी कीमत ये लोग नहीं समझेंगे। आपके प्रति हमारी बहुत सहानुभूति है। आपके साथ अन्याय हुआ है। हम जानते हैं कि 2024 में सपा का खाता भी नहीं खुलने वाला है। चाचा अभी से रास्ता तय कर लो। सामान्य दिनों मे नेता विरोधी दल को सड़क पर सांड नजर आते हैं। लेकिन, कोरोना काल में सड़क पर 40 लाख कामगार प्रवासी नहीं दिखे...। दरअसल ये घर से निकले ही नहीं। हम तो नंदी के रूप में सांड की पूजा करते हैं। शिवपाल जी क्या आप नंदी के रूप में पूजा नहीं करते? जिन सांड की बात आप कर रहे हैं। यही सांड आपके समय में बूचड़खाने में होते थे। हमारे समय में ये किसान पशुधन का पार्ट बने हैं।

कांवड़ियों पर हमने फूल बरसाए

आपने तो कांवड़ियों को बैन कर दिया था। जन्माष्टमी महोत्सव को बैन कर दिया गया था। जब मैं आया, तो मैंने पूछा कि जन्माष्टमी पर क्या है? तब बताया गया कि बैन किया गया है। तब मैंने कहा कि जन्माष्टमी सभी थानों और जेल में धूमधाम से मनाई जाएगी। इनकी परेशानी सांड से नहीं, इल्लीगल स्लाटर हाउस बंद होने से हैं। विपक्ष के पास विकास का कोई एजेंडा ना पहले था, ना अभी है। उत्तर प्रदेश सरकार अपने अन्नदाता किसानों के साथ खड़ी है। नेता विरोधी दल और समाजवादी पार्टी के पास प्रदेश के विकास का कोई एजेंडा ना पहले था ना अभी है। जनता इसीलिए बार–बार इनका जवाब दे रही है। जितनी देर में लोक भवन में एक महीने में बैठा हूं, उतना नेता विरोधी दल 5 साल में मुख्यमंत्री के तौर पर मुख्यमंत्री कार्यालय में नहीं बैठे होंगे। उत्तर प्रदेश सरकार ने बाढ़ और सूखा से जो किसानों को समस्याएं आई हैं, उनको राहत देने का काम करेगी।

ये किसान, गरीब, दलित की पीड़ा क्या समझेंगे?

मैंने नेता विरोधी दल की बातों को सुना। एक घंटे के भाषण में उन्हें सिर्फ गोरखपुर का जलजमाव दिखाई पड़ा। गोरखपुर में एक ही रात 133 मिमी बारिश हुई, इस वजह से जलजमाव हुआ। वहां लोग खुश हैं। उन्हें पता है कि अब जलजमाव नहीं होगा। जो लोग जन्म से चांदी के चम्मच से खाने के आदी हैं वो किसान, गरीब, दलित की पीड़ा क्या समझेंगे? पिछड़ों, अति पिछड़ों के साथ इन्होंने क्या व्यवहार किया, ये पूरा प्रदेश जानता है। चौधरी चरण सिंह की बातों को अगर सपा ने जरा–सा भी ध्यान दिया होता, तो इनके शासन काल में सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या न करते।

सपा के हंगामे को लेकर कहा, 'मातृशक्ति की प्रतीक महिला राज्यपाल (आनंदीबेन पटेल) जब सदन को संबोधित कर रही थीं, उस समय नारे लगाना, उनको वापस जाने के लिए कहना, असंसदीय व्यवहार करना कितना सही है? ये प्रदेश की आधी आबादी को अपमान करने जैसा है। जब सालों पहले गेस्ट हाउस कांड में घटना घटी थी, तब भी इनका आचरण सामने आया था। 'लड़के हैं, गलती कर देते हैं' ऐसे ही तमाम वक्तव्य सामने आए थे। ये लोग लोकतंत्र की बात करते हैं, ये आश्चर्यजनक स्थिति है। प्रयागराज में 24 फरवरी को उमेश पाल की हत्या हुई। विधानसभा सत्र के दौरान सपा ने यूपी की कानून व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किए, तब योगी ने विधानसभा में कहा– माफिया को मिट्टी में मिला देंगे। योगी ने सवाल उठाया– उमेश पाल की हत्या में जिस अपराधी ने घटना को अंजाम दिया। क्या वह समाजवादी पार्टी की ओर से पोषित नहीं किए गए थे?

योगी ने कहा था कि ये जो अपराधी और माफिया हैं...आखिर ये पाले किसके द्वारा गए हैं? क्या ये सच नहीं है कि जिसके खिलाफ थ्प् दर्ज है, उन्हें सपा ने ही सांसद बनाया था? आप अपराधी को पालेंगे और उसके बाद आप तमाशा बनाते हैं। इस माफिया को मिट्टी में मिला देंगे। सीएम योगी ने सपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि उस माफिया को आपने विधायक बनाया। 2004 और 2009 में उस माफिया को सांसद बनाने का काम भी सपा ने किया। माफिया किसी भी पार्टी का हो, हमारी सरकार उसकी कमर तोड़ने का काम करेगी। सपा पर हमला करते हुए योगी ने कहा– आपने अपराधियों को माला पहनाई। उसके बाद सदन में दोषारोपण कर रहे हैं। यह लोग माफियाओं के सरपरस्त हैं। यह लोग यही करते रहे हैं। अपराध के अलावा इनका कोई काम नहीं है।

उत्तर प्रदेश के 55 रेलवे अमृत स्टेशन विश्वस्तरीय बनेंगे : मोदी

नये भारत के अमृतकाल में बदलते देश में इन्फ्रार्स्टक्चर मजबूर हो रहा है। स्थलमार्ग, जलमार्ग, वायुमार्ग के साथ–साथ रेलमार्ग में अमूलचूल परिवर्तन आया है। तेजगति की ट्रेने, साफसुथरे, आधुनिक सुविधाओं से युक्त होते जा रहे। रेलवे स्ऐशन भारत की आत्म निर्भरता के प्रतीक बनते जा रहे हैं इसी श्रृंखला में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "अमृत भारत स्टेशन योजना" के तहत 4355.2 करोड़ की लागत से उत्तर प्रदेश के 55 रेलवे स्टेशन तथा लगभग 24,470 करोड़ की लागत से देश के 508 रेलवे स्टेशन के आधुनिकीकरण व पुनर्विकास कार्य का शुभारम्भ कर देशवासियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित किया। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी सहित केन्द्रीय व राज्य सरकार के मंत्री, सांसद, विधायकों ने नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को सुना।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का पुनर्विकास कार्यों के लिए उत्तर प्रदेश के 55 रेलवे स्टेशन चुनने के लिए धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। श्री चौधरी ने कहा कि मोदी सरकार देश के सामान्य यात्रियों को बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। हर अमृत स्टेशन शहर की आधुनिक आकांक्षाओं और प्राचीन विरासत का प्रतीक बनेगा। उत्तर प्रदेश के 55 रेलवे स्टेशन विश्व स्तरीय बनेंगे और हर एक रेलवे स्टेशन एयरपोर्ट की तरह दिखेगा। डबल इंजन सरकार में उत्तर प्रदेश के विश्व स्तरीय विकास की प्रतिबद्धता समाहित है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत, वैभवशाली भारत तथा देश के सभी नागरिकों को विश्व स्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने का संकल्प रेलवे स्टेशनों के आधुनिकीकरण से मजबूत होगा।

प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह ने बताया कि अमृत स्टेशन योजना के तहत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किये जाने वाले शिलान्यास कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी राजधानी लखनऊ के बादशाहनगर स्टेशन पर तथा उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य प्रयागराज जंक्शन पर होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। केन्द्रीय मंत्री माननीय स्मृति ईरानी अमेठी, डा. महेन्द्र नाथ पाण्डेय चंदौली, श्री कौशल किशोर उतरेटिया जंक्शन, मा. अनुप्रिया पटेल विन्ध्याचल, मा. साध्वी निरंजन ज्योति फतेहपुर, जनरल वीके सिंह गाजियाबाद, सांसद श्री रमापति राम त्रिपाठी देवरिया सदर, श्री राजवीर सिंह राजू भैय्या कासगंज जंक्शन, श्री हरीश द्विवेदी बस्ती, श्री सत्यदेव पचौरी कानपुर सेंट्रल, श्री वीरेन्द्र सिंह मस्त बलिया, श्री साक्षी महाराज उन्नाव जंक्शन, श्रीमती हेमा मालिनी गोवर्धन प्रेविजिनल, श्री लल्लू सिंह दर्शननगर, श्री राजेश वर्मा सीतापुर जंक्शन, श्री उपेन्द्र रावत बाराबंकी जंक्शन, श्री दिनेश लाल यादव निरहुआ आजमगढ, श्री वीपी सरोज जौनपुर, श्री रमेश चन्द्र बिन्द भदोही, श्री अनुराग शर्मा वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, श्री मुकेश राजपूत फर्रूखाबाद, श्री सत्यपाल सिंह मोदीनगर, श्री प्रदीप कुमार शामली, राजेन्द्र अग्रवाल हापुड़, श्री घनश्याम लोधी रामपुर, श्री जय प्रकाश रावत हरदोई, श्रीमती केशरी देवी पटेल फूलपुर, श्री संगम लाल गुप्ता प्रतापगढ जंक्शन, श्री पकौड़ी लाल चौपन, श्री राजकुमार चाहर अछनेरा, विधान परिषद सदस्य श्री मुकेश शर्मा ऐशबाग स्टेशन सम्मिलित रहे।

विपक्षी इंडिया का व्यवधान

मणिपुर पर विपक्षी इं डि या का संसद में हंगामा जारी है। सरकार चर्चा को तैयार है। गृहमंत्री बयान देने को तैयार है।

सत्तापक्ष का यह भी कहना है कि मणिपुर के साथ बंगाल केरल और राजस्थान पर भी चर्चा होनी चाहिए। लेकिन नियम पर गतिरोध है। विपक्षी गठबंधन ने अपना एक प्रतिनिधि मण्डल मणिपुर भेजा। इस अवधि में राजस्थान केरल और पश्चिम बंगाल के भी सुरक्षा सम्बन्धी प्रसंग उठे। विपक्ष के दोहरे मापदंड भी चर्चा में आ गए। राजस्थान के एक मंत्री राजेंद्र गुढ़ा को बर्खास्त किया गया। उन्होंने गहलौत सरकार को आईना दिखाया था। उन्होंने विधासभा में अपने ही सरकार को घेरते हुए कहा कि था कि मणिपुर नहीं हमें खुद का राज्य देखना चाहिए। उन्होंने बीते दिनों राजस्थान में हुई हिंसा, बलात्कार, हत्याकांड पर अपनी सरकार को घेरा था। इस बयान पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजेंद्र गुढ़ा को मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया। वैसे इस मसले पर राहुल गांधी ने यह नहीं कहा कि राजेंद्र गुढ़ा की आवाज को दबाया जा रहा है,लोकतंत्र खतरे में है। गुढ़ा की लाल डायरी भी चर्चा में है। दूसरा प्रसंग केरल का है।

केरल में 'समान नागरिक संहिता के खिलाफ मुस्लिम यूथ लीग की रैली में हिन्दू विरोध हिंसक नारेबाजी की गई है। यह इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग की यूथ विंग है। केरल में कॉन्ग्रेस की गठबंधन साझीदार है। इसने वायनाड लोकसभा क्षेत्र से राहुल गाँधी को समर्थन दिया था। राहुल गांधी ने इस पार्टी को अमेरिका में सेक्युलर बताया था। तीसरा प्रकरण बंगाल का है। ममता बनर्जी के भतीजे और तृणमूल कांग्रेस के नेता अभिषेक बनर्जी ने पांच अगस्त को भाजपा नेताओं के घरों का घेराव करने का ऐलान किया था। इसके लिए पार्टी कार्यकर्ताओं को निर्देश दिए। ये वही कार्यकर्ता हैं जिन्होंने जो बंगाल के सभी चुनाव में हिंसक वारदात करते हैं। विरोधियों के घरों में आग लगाते है। महिलाओं से दुर्व्यवहार करते हैं। भय का माहौल बनाते हैं। ऐसे लोगों को विपक्षी नेताओं के घर घेरने का कार्यक्रम तृणमूल कांग्रेस द्वारा बनाया गया। बीजेपी नेताओं के परिजनों में दहशत फैल गई थी। ऐसा ऐलान करने वाला ममता बनर्जी का भतीजा और उत्तराधिकारी है। स्थानीय प्रशासन तो तृणमूल के स्थानीय नेताओं के सामने लाचार हो जाता है। युवराज के जलवे का क्या कहना। लेकिन गनीमत रही कि बीजेपी नेता की अपील पर न्यायालय ने भाजपा नेताओं के घरों का घेराव कार्यक्रम पर रोक लगा दी। इससे ममता के भतीजे अभिषेक को हाईकोर्ट से झटका लगा।

हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश टीएस शिवगणनम की खंडपीठ ने साफ कहा कि यह कार्यक्रम सार्वजनिक हित के लिए हानिकारक है। उन्होंने राज्य सरकार से यह भी पूछा कि अभिषेक बनर्जी के बयान के मद्देनजर उसने क्या कदम उठाए हैं।

हाईकोर्ट ने सवाल किया कि 'कल को कोई कह दे कि हाईकोर्ट का घेराव किया जाएगा तो क्या राज्य कार्रवाई नहीं करेगा। चीफ जस्टिस ने कहा कि 'राज्य को आम आदमी की चिंता नहीं है, यह बेहद चिंताजनक स्थिति है।' मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि 'अगर किसी का घर बहुत सारे लोग घेर लें, तो क्या सिर्फ उसी पर असर पड़ेगा.आम लोग भी इससे प्रभावित होगी।

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

इन प्रसंगों से विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडियन

नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस इं.डि.या. की नियत और नीति का अनुमान लगाया जा सकता है। विपक्षी नेताओं के घर घेरने की घोषणा को किसी ने भी लोकतंत्र और संविधान हमला नहीं बताया। किसी ने नहीं कहा कि विरोधियों को डराया जा रहा है। उनकी आवाज दबाई जा रही है।

गठबंधन का नाम बदला। लेकिन नीयत में कोई बदलाव नहीं हुआ। इस आधार पर मणिपुर पर इनके हंगामे और जांच दल भेजने की राजनीति को समझा जा सकता है। राज्य, जाति और मज़हब देख कर इनकी संवेदना पहले भी जागृत होती थी। आज वही हो रहा है। आज भी बंगाल राजस्थान केरल की स्थिति इनको विचलित नहीं करती। उस पर मौन रहते हैं। मणिपुर पर मुखर हैं। मणिपुर पर संसद में चर्चा होनी चाहिए। लेकिन इसके साथ ही केरल बंगाल और राजस्थान पर भी चर्चा आवश्यक है। लेकिन विपक्षी इन्डिया इसके प्रति गंभीर नहीं है। ऐसा हुआ तो इस गठबंधन के दलों को भी जबाब देना होगा। मणिपुर में अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की मैतेई समुदाय की मांग के विरोध में पर्वतीय जिलों में तीन मई को आदिवासी एकजुटता मार्च' के आयोजन के बाद राज्य में हिंसा भड़की थी। यहां मैतेई समुदाय के लोगों की संख्या लगभग त्रेपन प्रतिशत है। वे मुख्य रूप से इंफाल घाटी में रहते हैं। नगा और कुकी जैसे आदिवासियों की आबादी चालीस प्रतिशत है। वे ज्यादातर पर्वतीय जिलों में रहते है।

विपक्षी गठबंधन का प्रतिनिधि मण्डल एक एजेंडा लेकर गया था। उसकी रिपोर्ट पहले से तय थी। भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा ने इस प्रतिनिधि मण्डल पर गंभीर आरोप लगाए हैं। कहा कि इस प्रतिनिधिमंडल के आधे से अधिक सदस्य हत्या, हत्या का प्रयास, दंगा, अवैध हथियार रखने जैसे गंभीर मामलों के आरोपी हैं। विपक्षी इंडिया ने यह विचार नहीं किया कि मणिपुर की हिंसा में अफीम की अवैध खेती करने वालों की क्या भूमिका है। मणिपुर में लगभग साढ़े पंद्रह हजार एकड़ की जमीन पर अफीम की खेती होती है। अधिकांश जमीन पर कुकी–चिन नगा समुदाय के लोग अफीम की खेती करते हैं। वर्तमान प्रदेश इसके विरुद्ध अभियान चलाया था। ड्रग्स माफियाओं कार्यवाई की गई। कुकी समुदाय लंबे समय से अफीम की खेती करते आ रहे हैं, जिसकी वजह से मणिपुर में बड़ा ड्रग कल्चर खड़ा हुआ है। सरकार ने उसे नष्ट किया। हिंसा का एक कारण यह भी था। मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा नहीं मिला, इसलिए वो पहाड़ी इलाकों में नहीं बस सकते। जबकि नागा और कुकी जैसे आदिवासी समुदाय चाहें तो घाटी वाले इलाकों में जाकर रह सकते हैं।

मैतेई को भी जनजाति का दर्जा मिल जाता है तो उन्हें पहाड़ी इलाकों में रहने और बसने की कानूनी इजाजत मिल जाएगी यह भी हिंसा का कारण बना। मैतेई समुदाय आधे से अधिक है। लेकिन वह मात्र दस प्रतिशत इलाके में सीमित हैं। जबकि नब्बे प्रतिशत क्षेत्र में अन्य वर्गों का अधिकार है। मैतेई समुदाय की ओर से मणिपुर हाई कोर्ट में याचिका दायर की गई थी। इसमें अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने का मुद्दा उठाया गया था। याचिका में दलील दी गई थी कि 1949 में मणिपुर भारत का हिस्सा बना था। उससे पहले तक मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा हासिल था। लेकिन बाद में उसे एसटी लिस्ट से बाहर कर दिया गया।

मैतेई की जनजाति के दर्जे की मांग के विरोध में तीन मई को रैली निकाली गई। 'आदिवासी एकता मार्च' के नाम से ये रैली ऑल ट्राइबल स्टूडेंट यूनियन मणिपुर की ओर से निकाली गई थी। इसमें कुकी और नगा समुदाय से के लोग शामिल थे। जबकि समस्या जनजाति को मिलने वाली सुविधाओं तक सीमित नहीं है। मैतेई समुदाय मानना है कि कुकी म्यांमार की सीमा पार कर यहां आए हैं और मणिपुर के जंगलों पर कब्जा कर रहे हैं। उन्हें हटाने के लिए राज्य सरकार अभियान चला रही है।

दो महिलाओं के साथ जो घृणित अमानवीय संवेदना हीन व्यवहार किया गया, वह अक्षम्य है। मणिपुर के मुख्यमंत्री

मैतेई समुदाय के हैं। उन्होंने कहा कि घटना के दोषियों को कठोरतम सजा दिलाने के लिए सरकार अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

यह भी मानना पड़ेगा कि लुक ईस्ट योजना के अंतर्गत नरेंद्र मोदी सरकार ने उल्लेखनीय कार्य किए है। पूर्वोत्तर राज्यों में अभूतपूर्व विकास कार्य हुए हैं। पूर्वोत्तर के सभी राज्य विकास की राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल हुए हैं।

विश्ववरेण्य भारतीय संस्कृति

भारत अव्याख्येय है। राष्ट्र रूप में भारत की व्याख्या कठिन है। यह सामान्य राष्ट्र राज्य नहीं है। भूमि का साधारण खण्ड नहीं है। सामान्य इतिहास या भूगोल नहीं है। इस धरती के लोग सदियों से व्यक्तिगत हित की तुलना में विश्व लोकमंगल की आराधना में संलग्न रहे हैं। भारत की अनुभूति संसार में अद्वितीय है। यह एक प्रेमपूर्ण गीत है। हम सब के अंतस का छंदस है भारत। भारत और भारतीय संस्कृति विश्व के विद्वानों के लिए शोध का विषय रहे हैं। ऋग्वेद में एक सुंदर मन्त्र में भारत बोध की झांकी है, ''हे सोम देव जहाँ सदा नीरा नदियां बहती हैं। प्रचुर अन्न होता है। कृषि धन धान्य देती है। जहाँ मुद, मोद, प्रमोद विस्तृत हैं। हम उसी भूखंड में आनंदित रहना चाहते हैं।'' संविधान की उद्देशिका 'हम भारत के लोग' वाक्य से प्रारम्भ होती है। उद्देशिका के 4 शब्द महत्वपूर्ण है। हम भारत के लोगों की राष्ट्रीय संरचना का आधार जाति, पंथ, मत, मजहब नहीं है। ऐसा होता तो संविधान निर्माता उद्देशिका में दर्ज करते कि, ''हम भारत के अगड़े, पिछड़े जाति और पंथ से जुड़े लोग संविधान बनाते हैं।'' वैदिक काल की सबसे छोटी, सुसंगठित और प्रीतिपूर्ण इकाई परिवार है। गण कई परिवारों से मिलकर बने समूह हैं। गण महत्वपूर्ण है। सभी गणों में परस्पर सम्बंध थे। राष्ट्रगान में जन के साथ गण हैं। गण नाम के इस छोटे से समूह नेता गणपति कहा जाता था। जैसे गण का नेता गणपति होता था वैसे ही गण का आराध्य देवता गणेश। गणेश गण और ईश से मिलकर बना शब्द है। बृहस्पति के लिए ऋग्वेद में स्तुति है – गणानां त्वा गणपतिं – आप विद्वान हैं। गणपति हैं। गण परस्पर प्रीति और प्यार में साधनारत एक सामूहिक इकाई थी। वैदिक इतिहास में अनेक गण हैं। देवताओं के समूह भी गण हैं। जैसे मरुदगण, रूद्रगण आदि। सांस्कृतिक व आर्थिक कारणों से गण टूट कर जन नाम की बड़ी इकाई में बदल गए। तब अनेक जन थे। लेकिन पांच जनों की चर्चा ज्यादा है। ये पंचजन अनु, द्रुह्यु , यदु, तुर्वश और पुरु थे। सरस्वती वैदिक काल की प्रसिद्ध नदी हैं। उनसे स्तुति है कि आप पांच जनों को समृद्धि देती हैं। जन गण से बड़े जनसमूह थे। इनका उल्लेख वैदिक साहित्य में विद्यमान है। भारतीय संस्कृति उदात्त और विश्ववरेण्य है। इस संस्कृति के प्रति दुनिया के तमाम देशों का आदर भाव रहा है और आज भी है। वैदिक ऋषियों का संकल्प ध्यान देने योग्य है। कहते हैं, ''कृण्वंतों विश्वं आर्यं – हम विश्व को आर्य बनाना चाहते हैं। हम किसी भी राष्ट्र राज्य पर आक्रमण के इच्छुक नहीं हैं। भरतीय इतिहास में किसी दूसरे देश को जीतने की इच्छा नहीं मिलती। हाल ही में विश्व मुस्लिम लीग के प्रमुख मोहम्मद बिन अब्दुल करीम अल ईसा भारत आए थे। इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में अल ईसा ने भारत के ज्ञान और संविधान की प्रशंसा की है। विश्व मुस्लिम लीग दुनिया के सबसे बड़े मुस्लिम संगठनों में गिना जाता है। इसके प्रमुख अल ईसा ने भारत को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का सुंदर उदाहरण बताया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अल ईसा से भारत और सऊदी अरब के बीच साझेदारी को गहरा करने पर विचारों के आदान प्रदान की बातें कीं।

पंथिक मजहबी समूहों का सहअस्तित्व बड़ा कठिन होता है। गाँधी जी स्वाधीनता के पहले से ही हिन्दू मुस्लिम भाईचारा स्थापित करने के लिए सक्रिय थे।

हृदयनारायण दीक्षित

उन्होंने अल ईसा के साथ हुई बैठक का जिक्र करते हुए कहा कि हमने अंतरधार्मिक वार्ता को आगे बढ़ाने, चरमपंथी विचारधाराओं का मुकाबला करने व वैश्विक शांति को बढ़ावा देने पर बातचीत की।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति की चर्चा होती है। होनी भी चाहिए। तमाम कारणों से विश्व तनाव में है। इसका एक कारण मजहबी कट्टरपंथ भी है। पंथिक मजहबी समूहों का सहअस्तित्व बड़ा कठिन होता है। गाँधी जी स्वाधीनता के पहले से ही हिन्दू मुस्लिम भाईचारा स्थापित करने के लिए सक्रिय थे। बहुसंख्यक समाज के सामने सहअस्तित्व को लेकर कोई कठिनाई नहीं थी। लेकिन कट्टरपंथी मजहबी तत्वों को सहअस्तित्व की यह धारणा अच्छी नहीं लगी। गाँधी जी ने स्वीकार किया कि हिन्दू मुस्लिम एकता व सहअस्तित्व के प्रश्न पर उन्होंने हार मान ली है। अल ईसा ने सारी दुनिया से अपील की कि शांति के सम्बंध में भारत से सीखना चाहिए। उनका वक्तव्य आदर योग्य है। भारतीय ज्ञान ने दुनिया को प्रभावित किया है। विश्व शांति और लोकमंगल भारतीय राष्ट्र राज्य के ध्येय रहे हैं।

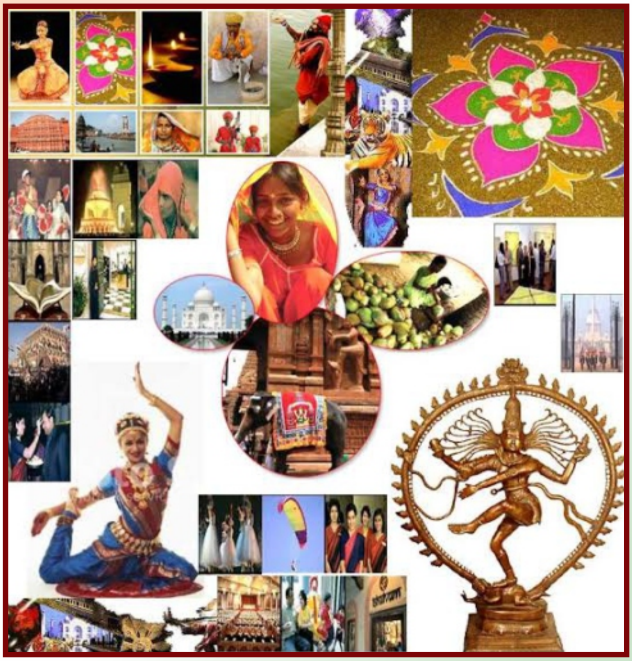

भारतीय समाज में गजब की विविधता है। अनेक जातियाँ हैं। अनेक विश्वास हैं। विविधता स्वाभाविक है। लेकिन तमाम विविधताओं के बावजूद भारत में सभी विचारधाराओं और विश्वासों का सहअस्तित्व रहा है। सभी विचारधाराओं के बीच संवाद रहा है। आज भी है। भारतीय समाज के चिंतकों, विद्वानों और वैदिक काल के ऋषियों ने शांति की उपासना की है। ऋग्वेद में विश्व शांति की प्रार्थना है और यह भारतवासियों की शांति की प्यास को सुंदर अभिव्यक्ति देती है। शांति मन्त्र में कहते हैं, ''अंतरिक्ष शांत हों। पृथ्वी शांत हों। आकाश शांत हों। शांति भी शांत हों।'' यहाँ केवल मनुष्यों के बीच परस्पर सद्भाव वाली शांति की ही बात नहीं है। यहाँ पृथ्वी से लेकर आकाश तक शांति स्थापित होने की प्रार्थना है। शांति अशांति की अनुपस्थिति नहीं है। शांति मौलिक रूप में मानव मन की प्राकृतिक प्यास है। अशांत चित्त से सृजन संभव नहीं होते। अशांत चित्त विध्वंसक होता है और शांत चित्त सर्जक। अल ईसा ने संवाद शांति और भाईचारा के लिए भारत की प्रशंसा उचित ही की है। जन गण का सामूहिक मन स्वाभाविक होता है। वह सामूहिक होकर ही समाज को आनंद देता है। मन चंचल होता है। मन की गलती को मनमानी कहते हैं। वैदिक पूर्वज मन की चंचलता को लेकर सजग थे। यजुर्वेद में मन को प्रशांत और लोक कल्याण से जोड़ने सम्बंधी 6 मंत्र एक साथ आए हैं। इसे शिव संकल्प सूक्त कहते हैं। ऋषि कहते हैं, ''हमारा मन कभी पर्वत की ओर कभी आकाश की ओर जाता है। कभी इस नगर में कभी उस नगर में जाता है। हे देवताओं उस मन को शिव संकल्प से भर दो।'' शिव संकल्प वस्तुतः मन को लोक कल्याण की भावना से भरने का नाम है।

सम्प्रति दुनिया के तमाम देशों की सीमाएं रक्तरंजित हैं। यूक्रेन और रूस के मध्य जारी युद्ध से धरती आकाश तनावग्रस्त हैं। आतंकवादी मजहब के नाम पर लोगों को मार रहे हैं। बच्चे और महिलाऐं भी मारी जा रही हैं। कहते हैं, ''हमारा बेचैन मन कभी यहाँ कभी वहाँ हमको विषाद की दशा में ले जाता है। हे देवताओं हमारा मन शिव संकल्प से भरो – तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु। पूर्वजों ने सारी दुनिया को आनंदित करने के लिए लगातार चिंतन किया था। ऋग्वेद का अंतिम सूक्त ध्यान देने योग्य है। अग्नि से प्रार्थना है कि, ''हमारे मन संकल्प एक ध्येय हों। मन समान हों। सभा और समितियां भी समान हों। सब लोग साथ साथ चलें। साथ साथ प्रेमपूर्ण वार्ता करें। सबके चित्त एक समान हों। सबका समान मन चित्त समान हो। हम लोकमंगल के लिए काम करें। अंत में कहते हैं, ''सं वो मनासि जानतां। ऐसा ही तप और कार्य हमारे पूर्वज करते आए हैं – देवानां यथा पूर्वे सं जानां उपासते।

आत्म निर्भर भारत में रोजगारपरक शिक्षा

किसी भी राष्ट्र का विकास, उस राष्ट्र शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। शिक्षा के द्वारा बालक में मानवीय गुण विकसित होते है। उसके साथ ही जीवनयापन की क्षमता का भी विकास होता है –

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की भावना का आदर करते हुये यह निश्चित किया जाना आवश्यक है कि शिक्षा इस प्रकार की हो जिससे जीवन यापन की योग्यता उत्पन्न हो सके।

आजकल स्नातक तथा परास्नातक तक की शिक्षा तो प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु उन्हें नौकरी नहीं मिलती, उनका मानसिक विकास तो होता है पर हाथ में कुछ करने को नहीं होता।

वर्तमान युग मशीनों का युग है। सभी को सरकारी नौकरी और रोजगार मिल पाना सम्भव नहीं है। व्यक्तियों को अपनी रोजी–रोटी का साधन मिल सके। इस स्थिति को नियंत्रण में लाने का एक उपाय है, व्यवसायिक शिक्षा।

शिक्षा रोजगारपरक है। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात व्यक्ति किसी न किसी व्यवसाय से जुड़ जाता है और व्यवसाय से जुड़ने के बाद वह बेरोजगार रहे वह प्रश्न ही पैदा नहीं होता। व्यवसायिक शिक्षा द्वारा ही समाज व राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। भारत में व्यवसायिक शिक्षा वैदिककाल से ही प्रचलित थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत व्यवसायिक शिक्षा के उद्देश्य–व्यवसायिक दक्षता प्राप्त करना, व्यवसायिक अभिरूचि उत्पन्न करना, क्षेत्र उपयोगिता, हाथ से काम करने की क्षमता का विकास, स्वतंत्र रोजगार करने की क्षमता का विकास, स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना, आत्म निर्भर बनना, उत्पादन बढ़ाना, समाज में श्रम के प्रति निष्ठा सम्पन्न करना, राष्ट्र के आर्थिक ढाँचे को मजबूत बनाना, राष्ट्र निर्माण में स्वयं की भागीदारी सुनिश्चित करना, रोजगार तक शिक्षा का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बढ़ाना।

डॉ0 रजनी सरीन

आज युवा पीढ़ी को चाहिए कि वह शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दें जिससे उनका भविष्य उज्जवल शिखर की तरफ बढ़ सके और आने वाला समय स्वर्णिम बन सके।

हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री तथा कर्तव्यनिष्ठ मुख्यमंत्री जी का कहना है कि अपना कैरियर स्वयं निर्धारित करते हुये व्यवसायिक शिक्षा को ग्रहण करें इससे उनको कोई परेशानी का सामना न करना पड़े और आगे जाके अपना एक अच्छा कैरियर बना सकें और अपने पैरों पर मजबूती से खड़े हो सकें। अपना स्वयं का स्टार्टअप शुरू कर सके, स्वयं का नवप्रवर्तन केन्द्र तथा अनुसंधान केन्द्र शुरू कर सके, जिसके लिए बैंक से कर्ज भी सरलता से उपलब्ध है।

यह सब मोदी जी की विस्तृत सोंच का परिणाम है वह सोते जागते बैठते सिर्फ एक ही बात पर विचार करते हैं कि कैसे भारतवासियों के कष्ट दूर किये जाये, किस तरह यहां गरीबी दूर हो, कैसे लोग मेहनत कर राष्ट्र को विश्व गुरू बनाने में कदम से कदम मिलाकर चलें।

उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि सबसे ताकतवर देश भी यदि भारत वर्ष के साथ उचित व्यवहार नहीं करेंगे तो वह 140 करोड़ भारतवासियों के प्रतिनिधि बन इस अन्याय के विरोध में आवाज बुलंद करेंगे और अमेरिका यात्रा में उन्होंने देश का सम्मान बढ़ाया है। फ्रांस तथा यू.ई. यात्रा में भाइचारे को शिखर तक पहुंचा दिया है।

ईश्वर की विशेष कृपा से मोदी जी अपनी ही जीवनयात्रा में भारत को विश्व गुरू के रूप में सीापित करने में 132 करोड़ भारतवासियों का सहयोग ले संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर हैं। जिससे सबका साथ–सबका विकास सुनिश्चित होगा।

मेरी माटी, मेरा देश

जुलाई का महीना यानि मानसून का महीना, बारिश का महीना। बीते कुछ दिन, प्राकृतिक आपदाओं के कारण, चिंता और परेशानी से भरे रहे हैं। यमुना समेत कई नदियों में बाढ़ से कई इलाकों में लोगों को तकलीफ उठानी पड़ी है। पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की घटनाएँ भी हुई हैं। इसी दौरान, देश के पश्चिमी हिस्से में, कुछ समय पूर्व गुजरात के इलाकों में, बिपरजॉय चक्रवात भी आया। लेकिन साथियो, इन आपदाओं के बीच, हम सब देशवासियों ने फिर दिखाया है, कि, सामूहिक प्रयास की ताकत क्या होती है। स्थानीय लोगों ने, हमारे NDRF के जवानों ने, स्थानीय प्रशासन के लोगों ने, दिन–रात लगाकर ऐसी आपदाओं का मुकाबला किया है। किसी भी आपदा से निपटने में हमारे सामर्थ्य और संसाधनों की भूमिका बड़ी होती है – लेकिन इसके साथ ही, हमारी संवेदनशीलता और एक दूसरे का हाथ थामने की भावना, उतनी ही अहम होती है। सर्वजन हिताय की यही भावना भारत की पहचान भी है और भारत की ताकत भी है।

बारिश का यही समय 'वृक्षारोपण' और 'जल संरक्षण' के लिए भी उतना ही जरुरी होता है। आजादी के 'अमृत महोत्सव' के दौरान बने 60 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों में भी रौनक बढ़ गई है। अभी 50 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों को बनाने का काम चल भी रहा है। हमारे देशवासी पूरी जागरूकता और जिम्मेदारी के साथ 'जल संरक्षण' के लिए नए–नए प्रयास कर रहे हैं। आपको याद होगा, कुछ समय पहले, मैं, एम.पी. के शहडोल गया था। वहाँ मेरी मुलाकात पकरिया गाँव के आदिवासी भाई–बहनों से हुई थी। वहीं पर मेरी उनसे प्रकृति और पानी को बचाने के लिए भी चर्चा हुई थी। अभी मुझे पता चला है कि पकरिया गाँव के आदिवासी भाई–बहनों ने इसे लेकर काम भी शुरू कर दिया है। यहाँ, प्रशासन की मदद से, लोगों ने, करीब सौ कुओं को जल पुनर्भरण प्रणाली में बदल दिया है। बारिश का पानी, अब इन कुओं में जाता है, और कुओं से ये पानी, जमीन के अंदर चला जाता है। इससे इलाके में भू–जल स्तर भी धीरे–धीरे सुधरेगा। अब सभी गाँव वालों ने पूरे क्षेत्र के करीब–करीब 800 कुएं को पुनर्भरण के लिए उपयोग में लाने का लक्ष्य बनाया है। ऐसी ही एक उत्साहवर्धक खबर यू.पी. से आई है। कुछ दिन पहले, उत्तर प्रदेश में, एक दिन में, 30 करोड़ पेड़ लगाने का कीर्तिमान बनाया गया है।

हमारी इस आस्था और इन परम्पराओं का एक पक्ष और भी है। हमारे ये पर्व और परम्पराएँ हमें गतिशील बनाते हैं। सावन में शिव आराधना के लिए कितने ही

भक्त काँवड़ यात्रा पर निकलते हैं। 'सावन' की वजह से इन दिनों 12 ज्योतिर्लिंगों में भी खूब श्रद्धालु पहुँच रहे हैं। आपको' ये जानकार भी अच्छा लगेगा कि बनारस पहुँचने वाले लोगों की संख्या भी कीर्तिमान तोड़ रही है। अब काशी में हर साल 10 करोड़ से भी ज्यादा पर्यटक पहुँच रहे हैं। अयोध्या, मथुरा, उज्जैन जैसे तीर्थों पर आने वाले श्रद्दालुओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। इससे लाखों गरीबों को रोजगार मिल रहा है, उनका जीवन–यापन हो रहा है। चार्लोट शोपा एक योगाभ्यासकर्ता हैं, योग शिक्षक है, और उनकी उम्र, 100 साल से भी ज्यादा है। वो शतक पार कर चुकी हैं। वो पिछले 40 साल से योग अभ्यास कर रही हैं। वो अपने स्वास्थ्य और 100 साल की इस आयु का श्रेय योग को ही देती हैं। वो दुनिया में भारत के योग विज्ञान और इसकी ताकत का एक प्रमुख चेहरा बन गई हैं। इन से हर किसी को सीखना चाहिए। हम न केवल अपनी विरासत को अंगीकार करें, बल्कि, उसे जिम्मेदारी से साथ विश्व के सामने प्रस्तुत भी करें। और मुझे खुशी है कि ऐसा ही एक प्रयास इन दिनों उज्जैन में चल रहा है। यहाँ देशभर के 18 चित्रकार, पुराणों पर आधारित आकर्षक चित्रकथाएँ बना रहे हैं। ये चित्र, बूंदी शैली, नाथद्वारा शैली, पहाड़ी शैली और अपभ्रंश शैली जैसी कई विशिष्ट शैलियों में बनेंगे। इन्हें उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय में प्रदर्शित किया जाएगा, यानि कुछ समय बाद, जब आप उज्जैन जाएंगे, तो, महाकाल महालोक के साथ–साथ एक और दिव्य स्थान के आप दर्शन कर सकेंगे।

उज्जैन में बन रही इन चित्रकारी की बात करते हुए मुझे एक और अनोखी चित्रकारी की याद आ गई है। ये चित्रकारी राजकोट के एक कलाकार प्रभात सिंग मोडभाई बरहाट जी ने बनाई थी। ये चित्रकारी, छत्रपति वीर शिवाजी महाराज के जीवन के एक प्रसंग पर आधारित थी। कलाकार प्रभात भाई ने दर्शाया था कि छत्रपति शिवाजी महाराज राज्याभिषेक के बाद अपनी कुलदेवी 'तुलजा माता' के दर्शन करने जा रहे थे, तो उस समय क्या माहौल था। अपनी परम्पराओं, अपनी धरोहरों को जीवंत रखने के लिए हमें उन्हें सहेजना होता है, उन्हें जीना होता है, उन्हें अगली पीढ़ी को सिखाना होता है। मुझे खुशी है, कि, आज, इस दिशा में अनेकों प्रयास हो रहे हैं। कई बार जब हम इकोलॉजी, फ्लोर, फौना, बायो डाइवर्सिटी जैसे शब्द सुनते हैं, तो कुछ लोगों को लगता है कि ये तो विशेष विषय है, इनसे जुड़े निर्यात के विषय हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर हम वाकई प्रकृति प्रेम करते हैं, तो हम अपने छोटे–छोटे प्रयासों से भी बहुत कुछ कर सकते हैं। तमिलनाडु में वाडावल्ली के एक साथी हैं, सुरेश राघवन जी। राघवन जी को चित्रकारी का शौक है। आप जानते हैं, चित्रकारी कला और कैनवास से जुड़ा काम है, लेकिन, राघवन जी ने तय किया कि वो अपनी चित्रकारी के जरिए पेड़–पौधों और जीव जंतुओं की जानकारी को संरक्षित करेंगे। वो अलग–अलग फ्लोर और फौना की चित्रकारी बनाकर उनसे जुड़ी जानकारी का डॉक्यूमेंटेशन करते हैं। वो अब तक दर्जनों ऐसी चिड़ियाओं की, पशुओं की, ओर्चिड्स की चित्रकारी बना चुके हैं, जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। कला के जरिए प्रकृति की सेवा करने का ये उदाहरण वाकई अद्भुत है।

आज मैं आपको एक और दिलचस्प बात भी बताना चाहता हूँ। कुछ दिन पहले सोशल मिडिया पर एक अद्भुत पागलपन दिखा। अमेरिका ने हमें सौ से ज्यादा दुर्लभ और प्राचीन कलाकृतियाँ वापस लौटाई हैं। इस खबर के सामने आने के बाद सोशल मिडिया पर इन कलाकृतियों को लेकर खूब चर्चा हुई। युवाओं में अपनी विरासत के प्रति गर्व का भाव दिखा। भारत लौटीं ये कलाकृतियाँ ढाई हजार साल से लेकर ढाई सौ साल तक पुरानी हैं। आपको यह भी जानकर खुशी होगी कि इन दुर्लभ चीजों का नाता देश के अलग–अलग क्षेत्रों से है। ये टेराकोटा, स्टोन, मेटल और लकड़ी के इस्तेमाल से बनाई गई हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी हैं, जो आपको, आश्चर्य से भर देंगी। आप इन्हें देखेंगे, तो देखते ही रह जायेंगे। इनमें 11वीं शताब्दी का एक खुबसूरत बलुआ पत्थर की मूर्ति (स्कल्पचर) भी आपको देखने को मिलेगा। ये नृत्य करती हुई एक 'अप्सरा' की कलाकृति है, जिसका नाता, मध्य प्रदेश से है। चोल युग की कई मूर्तियाँ भी इनमें शामिल हैं। देवी और भगवान मुर्गन की प्रतिमाएँ तो 12वीं शताब्दी की हैं और तमिलनाडु की वैभवशाली संस्कृति से जुड़ी हैं। भगवान गणेश की करीब एक हजार वर्ष पुरानी कांसे की प्रतिमा भी भारत को लौटाई गई है। ललितासन

में बैठे उमा–महेश्वर की एक मूर्ति 11वीं शताब्दी की बताई जाती है जिसमें वह दोनों नंदी पर आसीन हैं। पत्थरों से बनी जैन तीर्थंकरों की दो मूर्तियाँ भी भारत वापस आई हैं। भगवान सूर्य देव की दो प्रतिमाएं भी आपका मन मोह लेंगी। इनमें से एक बलुआ पत्थर से बनी है। वापस लौटाई गई चीजों में लकड़ी से बना एक पैनल भी है, जो समुद्रमंथन की कथा को सामने लाता है। 16वीं–17वीं सदी के इस पैनल का जुड़ाव दक्षिण भारत से है।

जम्मू–कश्मीर में संगीतमय रातें हों, ऊँचा स्थान में बीके रैली हों, चंडीगढ़ के स्थानीय क्लब हों, और, पंजाब में ढेर सारे खेल समूह हों, ये सुनकर लगता है, मनोरंजन की बात हो रही है, साहसिक कार्य की बात हो रही है। लेकिन बात कुछ और है, ये आयोजन एक सामान्य कारन से भी जुड़ा हुआ है। और ये सामान्य कारन है – ड्रग्स के खिलाफ जागरूकता अभियान। जम्मू –कश्मीर के युवाओं को ड्रग्स से बचाने के लिए कई अभिनव प्रयास देखने को मिले हैं। यहाँ, संगीतमय रातें, बीके रैली जैसे कार्यक्रम हो रहे हैं। चंडीगढ़ में इस मैसेज को फ़ैलाने के लिए स्थानीय क्लब को इससे जोड़ा गया है। वे इन्हें VADA (वादा) क्लब कहते हैं। VADA यानी नशीली दवाओं के दुरुपयोग के विरुद्ध विजय। पंजाब में कई खेल समूह भी बनाए गए हैं, जो स्वस्थ्य पर ध्यान देने और नशा मुक्ति के लिए जागरूकता अभियान चला रहे हैं। नशे के खिलाफ अभियान में युवाओं की बढ़ती भागीदारी बहुत उत्साह बढ़ाने वाली है। ये प्रयास, भारत में नशे के खिलाफ अभियान को बहुत ताकत देते हैं। हमें देश की भावी पीढ़ियों को बचाना है, तो उन्हें, ड्रग्स से दूर रखना ही होगा। इसी सोच के साथ, 15 अगस्त 2020 को 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की गई थी। इस अभियान से 11 करोड़ से ज्यादा लोगों को जोड़ा गया है। दो हफ्ते पहले ही भारत ने ड्रग्स के खिलाफ बहुत बड़ी कारवाई की है। ड्रग्स की करीब डेढ़ लाख किलो की खेप को जब्त करने के बाद उसे नष्ट कर दिया गया है। भारत ने 10 लाख किलो ड्रग्स को नष्ट करने का अनोखा कीर्तिमान भी बनाया है। इन ड्रग्स की कीमत 12,000 करोड़ रुपये से भी ज्यादा थी। मैं, उन सभी की सराहना करना चाहूँगा, जो, नशा मुक्ति के इस नेक अभियान में अपना योगदान दे रहे हैं। नशे की लत, न सिर्फ परिवार, बल्कि, पूरे समाज के लिए बड़ी परेशानी बन जाती है। ऐसे में यह खतरा हमेशा के लिए ख़त्म हो, इसके लिए जरुरी है कि हम सब एकजुट होकर इस दिशा में आगे बढ़ें।

आज जब देश में, चारों तरफ 'अमृत महोत्सव' की गूँज है, 15 अगस्त पास ही है तो देश में एक और बड़े अभियान की शुरुआत होने जा रही है। शहीद वीर–वीरांगनाओं को सम्मान देने के लिए 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान शुरू होगा। इसके तहत देश–भर में हमारे अमर बलिदानियों की स्मृति में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इन विभूतियों की स्मृति में, देश की लाखों ग्राम पंचायतों में, विशेष शिलालेख भी स्थापित किए जाएंगे। इस अभियान के तहत देश–भर में 'अमृत कलश यात्रा' भी निकाली जाएगी। देश के गाँव–गाँव से, कोने–कोने से, 7500 कलशों में मिट्टी लेकर ये 'अमृत कलश यात्रा' देश की राजधानी दिल्ली पहुचेंगी। ये यात्रा अपने साथ देश के अलग–अलग हिस्सों से पौधे लेकर भी आएगी। 7500 कलश में आई माटी और पौधों से मिलाकर फिर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के समीप 'अमृत वाटिका' का निर्माण किया जाएगा। ये 'अमृत वाटिका', 'एक भारत–श्रेठ भारत का' भी बहुत ही भव्य प्रतीक बनेगी। मैंने पिछले साल लाल किले से अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के लिए 'पंच प्राण' की बात की थी। 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान में हिस्सा लेकर हम इन 'पंच प्राणों' को पूरा करने की शपथ भी लेंगे। आप सभी, देश की पवित्र मिट्टी को हाथ में लेकर शपथ लेते हुए अपनी सेल्फी को लनअं.हवअ.पद पर जरुर अपलोड करें। पिछले वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए जैसे पूरा देश एक साथ आया था, वैसे ही हमें इस बार भी फिर से, हर घर तिरंगा फहराना है, और इस परंपरा को लगातार आगे बढ़ाना है। इन प्रयासों से हमें अपने कर्तव्यों का बोध होगा, देश की आजादी के लिए दिए गए असंख्य बलिदानों का बोध होगा, आजादी के मूल्य का ऐहसास होगा। इसलिए, हर देशवासी को, इन प्रयासों से, जरुर जुड़ना चाहिए।

लोक दरबार के प्रति जवाबदेही

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने जिला पंचायत अध्यक्षों और सदस्यों के दो दिवसीय क्षेत्रीय प्रशिक्षण वर्ग का शनिवार को गाजियाबाद में उद्घाटन किया। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रत्येक जनप्रतिनिधि की जबावदेही जनता के प्रति है। इसलिए जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को सुने, समझे तथा प्राथमिकता के आधार पर उनका समाधान कराएं। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की संस्कृति में लोकदरबार के प्रति जबावदेही, विनम्रता तथा अनुशासन समाहित है, जो भाजपा के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों तथा नेताओं को अन्य राजनैतिक दलों से अलग पहचान देते है।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह चौधरी ने जिला पंचायत अध्यक्षों एवं सदस्यों के साथ संवाद करते हुए कहा कि जनता के बीच रहकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केंद्र सरकार के सेवा सुशासन तथा गरीब कल्याण को समर्पित 9 वर्ष की उपलब्धियां तथा ऐतिहासिक व साहसिक निर्णयों के साथ प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को लेकर जनता के बीच संवाद करें। गरीब, किसान, गांव, गली, मोहल्लों, मजरों, टीलों, चौपालों तक संवाद व सम्पर्क से केन्द्र व प्रदेश सरकार की योजनाएं पहुंचाने का काम करना है। प्रतिदिन का लक्ष्य तय करते हुए नए लोगों को संगठन तथा विचारधारा से जोड़ने का कार्य करना है। भाजपा जितनी अधिक मजबूत होगी, अन्त्योदय की विचारधारा उतनी ही मजबूत होगी और इसके साथ ही गरीब और किसान की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति भी मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि पंचायतों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था से महिलायें राजनैतिक रूप से भी सशक्त हुई हैं और उनकी निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास हुआ है। जिससे पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी बढ़ी है। पार्टी की विचारधारा, नीतियों तथा जनकल्याणकारी योजनाओं को आधी आबादी तक पहुंचाने का माध्यम जिला पंचायत की महिला अध्यक्ष व सदस्य है।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि कार्यकर्ता पार्टी का मेरूदंड है और कार्यकर्ता के मनोबल, निष्ठा पूर्ण भाव, अथक परिश्रम तथा वैचारिक प्रतिबद्धता से ही भाजपा प्रत्येक चुनाव जीतती है और कार्यकर्ताओं के परिश्रम से ही मिशन 2024 को पूरा करते हुए प्रदेश की सभी 80 लोकसभा सीटे जीतकर पार्टी इतिहास रचेगी। बिजनौर में आयोजित लोकसभा प्रवास बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष श्री नरेश बंसल भी उपस्थित रहे।

श्री सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की सेवा, सुशासन तथा गरीब कल्याण को समर्पित 9 वर्ष की उपलब्धियां तथा पार्टी कार्यकर्ताओं का परिश्रम भाजपा की बड़ी विजय का माध्यम बनेगा। उन्होंने कहा कि विश्व में बढ़ती भारत की शक्ति, आर्थिक, सांस्कृतिक व सामरिक रूप से सशक्त होते भारत की गाथा प्रत्येक जन तक पहुंचाने का कार्य अनवरत रूप से करना है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार की सशक्त कानून व्यवस्था तथा अंत्योदय के लक्ष्य को पूर्ण करती जनकल्याणकारी योजनाएं हमारी चर्चाओं में सम्मिलित होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर प्रत्येक बूथ को मजबूत करने की रणनीति पर कार्य करना है और पन्ना प्रमुखों के साथ संवाद करते डोर–टू–डोर सम्पर्क, संवाद तथा 100 प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करने का काम भी करना है।

प्रशिक्षण वर्ग में प्रदेश महामंत्री राम प्रताप सिंह, सुभाष यदुवंश, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया, केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह एवं जिला पंचायत अध्यक्ष ममता त्यागी, महापौर श्रीमती सुनीता दयाल, राज्यसभा सांसद अनिल अग्रवाल उपस्थित रहे।

सार्वजनिक भूमि अतिक्रमण से मुक्त हो!

उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने बलिया और मऊ जनपद के प्रशासनिक व विकास से जुड़े अधिकारियों के साथ की बैठक कर उन्होंने विकास कार्यों की समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण एवं मुख्यमंत्री आवास योजना के आवासों का पिछले पांच वर्ष में किये गये निर्माण की जानकारी ली। कहा कि योजना के लाभार्थियों की संख्या का प्रचार–प्रसार भी कराया जाए। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग की समीक्षा के दौरान सीएमओ व डीपीआरओ को निर्देश दिए कि अगले एक महीने में अभियान चलाकर आयुष्मान भारत योजनान्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों को शत प्रतिशत हासिल किये जांए। इसके अलावा गोल्डेन कार्ड से उपचारित लाभार्थियों की संख्या भी बढ़ाने के निर्देश डिप्टी सी एम ने दिये। जिला अस्पताल के अलावा सभी सीएचसी–पीएचसी पर चिकित्सकों व दवाओं की उपलब्धता की जानकारी ली।

बैठक में 'मेरी माटी– मेरा देश' एवं 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी लेते हुए उप मुख्यमंत्री ने कार्यक्रमों से जुड़े समस्त विभागों को समय से सारी तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिये, ताकि कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित हो सके। विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान विद्युत आपूर्ति की शिकायत पर उन्होंने अधीक्षण अभियंता विद्युत को निर्देश दिया कि अधीनस्थ कार्यरत कर्मचारियों के कार्यों की नियमित समीक्षा करें और लापरवाह कार्मिकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें। इस बात का ख्याल रखें कि उपभोक्ताओं को कोई दिक्कत न हो। ओवर बिलिंग की शिकायत नहीं मिले। खाद्यान्न वितरण के बारे में डीएसओ से पूरी जानकारी ली। नियमित रूप से खाद्यान्न वितरण एवं खाली यूनिट की जानकारी जनपद के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये।

जनपद में तालाब, चारागाह, चकमार्ग, आदि जैसी सार्वजनिक भूमि पर अवैध अतिक्रमण की शिकायतों पर डिप्टी सी एम श्री मौर्य ने कहा कि ऐसी भूमि का सर्वे कर अवैध अतिक्रमण हटवाया जाए। इस दौरान कमजोर एवं गरीब लोगों को विस्थापित करने से पहले वैकल्पिक व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए। जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा के दौरान उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यों की गुणवत्ता की नियमित जांच करने एवं पाईपलाईन डालने के दौरान क्षतिग्रस्त सड़कों को तत्काल ठीक कराने के भी निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने बाढ़ खंड के अधिशासी अभियंता को गंगा नदी पर रिवर फ्रंट बनाने के लिए सर्वे कराने के निर्देश दिए, जिससे भविष्य में शहर की बाढ से सुरक्षा के साथ–साथ पर्यटन को भी बढ़ावा मिल सके। गो–आश्रय स्थलों में गोवंश संरक्षण की स्थिति की जानकारी लेते हुए उन्होंने सीवीओ को निर्देश दिया कि अभियान चलाकर निराश्रित गोवंशों को गो–आश्रय स्थलों में सुरक्षित करें।

बैठक के दौरान उप मुख्यमंत्री ने समस्त अधिकारियों को निर्देश दिया कि जनप्रतिनिधियों द्वारा संज्ञान में लाई गई शिकायतों का नियमानुसार तत्काल निस्तारण सुनिश्चित कराएं। गोंड एवं खरवार जाति के लोगों का जाति प्रमाण पत्र नहीं बनाये जाने की बात संज्ञान में आने पर उन्होंने

जिलाधिकारी को सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक कर नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिये। साथ ही जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण ढ़ंग से निस्तारण करने के निर्देश दिए। सभी अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया कि अपने–अपने विभागों में नवाचार को बढ़ावा दें। इस क्षेत्र में अच्छे कार्य करने वालों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

मऊ की बैठक में उन्होंने शीलाफलकम के निर्माण एवं झंडे की उपलब्धता की जानकारी लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए।विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान विद्युत आपूर्ति एवं ओवर बिलिंग की शिकायत पर उन्होंने अधीक्षण अभियंता विद्युत को अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों की नियमित समीक्षा करने और लापरवाह कार्मिकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को कहा। उन्होंने आपूर्ति की समस्या को दूर करने हेतु तत्काल प्रयास करने के निर्देश दिए। ओवर बिलिंग को लेकर उपमुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी को जांच टीम के कार्यों की निगरानी करने को भी कहा। इसके अलावा ओवर बिलिंग वाले मामलों का सत्यापन कर उचित बिल उपभोक्ताओं को देने के निर्देश उपमुख्यमंत्री द्वारा दिए गए। लोक निर्माण विभाग के कार्यों की समीक्षा के दौरान उपमुख्यमंत्री ने स्वीकृत मार्गों एवं टेंडर हो चुके मार्गों की सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिए, साथ ही पीडब्ल्यूडी द्वारा निर्मित खराब सड़कों का मरम्मत कराने के भी निर्देश उप मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए। मधुबन तहसील के ग्राम पंचायत बिंद टोलिया में बाढ़ के दौरान कटान की स्थिति के दृष्टिगत उन्होंने अधिशासी अभियंता सिंचाई को पूर्व में शासन को भेजे गए परियोजनाओं के अस्वीकृत होने के कारणों की जांच कर नई परियोजना तैयार कर शासन में भेजने को कहा, जिससे हर वर्ष बाढ़ के कारण बिंद टोलिया ग्राम को सुरक्षित किया जा सके। उन्होंने जिला समाज कल्याण अधिकारी को अनुसूचित जाति के छात्रों हेतु छात्रावास निर्माण की डिमांड शासन में भेजने के निर्देश दिए। क्षेत्र पंचायत के कार्यों को भी मनरेगा के तहत कराए जाने के निर्देश उपमुख्यमंत्री जी द्वारा दिए गए। उन्होंने अमृत सरोवरों की भूमि की पैमाइश कर अवैध अतिक्रमण पाए जाने पर उसे खाली कराने को कहा। मेरी माटी–मेरा देश कार्यक्रम के दौरान ग्राम पंचायतों में अमृत वाटिका हेतु पौधों की उपलब्धता की जानकारी लेते हुए उन्होंने डी.एफ.ओ. को आवश्यक निर्देश दिए। निराश्रित गोवंश की समीक्षा के दौरान उपमुख्यमंत्री ने समस्त निराश्रित गोवंशो को गो आश्रय स्थलों में संरक्षित करने एवं चारागाह की जमीन को अवैध कब्जे से मुक्त कराने हेतु आवश्यक निर्देश दिए।जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा के दौरान उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यों की गुणवत्ता की नियमित जांच करने एवं पाईपलाईन डालने के दौरान क्षतिग्रस्त सड़कों को तत्काल ठीक कराने के भी निर्देश दिए।

5 वर्षों में 13.5 करोड़ भारतीय बहुआयामी गरीबी से मुक्त हुए

वर्ष 2015–16 और 2019–21 के बीच बहुआयामी गरीबी वाले व्यक्तियों की संख्या 24.85 प्रतिशत से गिरकर 14.96 प्रतिशत हो गई

नीति आयोग के 'राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक: एक प्रगति संबंधी समीक्षा 2023' के अनुसार वर्ष 2015–16 से 2019–21 की अवधि के दौरान रिकॉर्ड 13.5 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से मुक्त हुए। 17 जुलाई को जारी नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में बहुआयामी गरीबों की संख्या जो वर्ष 2015–16 में 24.85% थी गिरकर वर्ष 2019–2021 में 14.96% हो गई, जिसमें 9.89% अंकों की उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। इस अवधि के दौरान शहरी क्षेत्रों में गरीबी 8.65 प्रतिशत से गिरकर 5.27 प्रतिशत हो गई, इसके मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी तीव्रतम गति से 32.59 प्रतिशत से घटकर 19.28 प्रतिशत हो गई है।

उत्तर प्रदेश में 3.43 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से मुक्त हुए, जो कि गरीबों की संख्या में सबसे बड़ी गिरावट है। 36 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों और 707 प्रशासनिक जिलों के लिए बहुआयामी गरीबी संबंधी अनुमान प्रदान करने वाली रिपोर्ट से पता चलता है कि बहुआयामी गरीबों के अनुपात में सबसे तीव्र कमी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा और राजस्थान राज्यों में हुई है।

एमपीआई मूल्य 0.117 से लगभग आधा होकर 0.066 हो गया है और वर्ष 2015–16 से 2019–21 के बीच गरीबी की तीव्रता 47% से घटकर 44% हो गई है, जिसके फलस्वरूप भारत 2030 की निर्धारित समय सीमा से काफी पहले एसडीजी लक्ष्य 1.2 (बहुआयामी गरीबी को कम से कम आधा कम करने का लक्ष्य) को हासिल करने के पथ पर अग्रसर है। इससे सतत और सबका विकास सुनिश्चित करने और वर्ष 2030 तक गरीबी उन्मूलन पर सरकार का रणनीतिक फोकस और एसडीजी के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का पालन परिलक्षित होता है।

स्वच्छता, पोषण, रसोई गैस, वित्तीय समावेशन, पेयजल और बिजली तक पहुंच में सुधार पर सरकार के समर्पित फोकस से इन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) के सभी 12 मापदंडों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पोषण अभियान और एनीमिया मुक्त भारत जैसे प्रमुख कार्यक्रमों ने स्वास्थ्य में अभावों को कम करने में योगदान प्रदान किया है, जबकि स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) और जल जीवन मिशन (जेजेएम) जैसी पहलों ने देशभर में स्वच्छता संबंधी सुधार किया है। स्वच्छता अभावों में इन प्रयासों के प्रभाव के परिणामस्वरूप तेजी से और स्पष्ट रूप से 21.8% अंकों का सुधार हुआ है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के माध्यम से सब्सिडी वाले रसोई गैस के प्रावधान ने जीवन को सकारात्मक रूप से बदल दिया है और रसोई गैस की कमी में 14.6% अंकों का सुधार हुआ है। सौभाग्य, प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई), प्रधानमंत्री जनधान योजना (पीएमजेडीवाई) और समग्र शिक्षा जैसी पहलों ने भी बहुआयामी गरीबी को कम करने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

विशेष रूप से बिजली के लिए अत्यन्त कम अभाव दर, बैंक खातों तक पहुंच तथा पेयजल सुविधा के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति प्राप्त करना नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने तथा सभी के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए सरकार की अटूट प्रतिबद्धता दर्शाती है। आपस में अत्यधिक जुड़े हुए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और पहलों के लगातार कार्यान्वयन से कई संकेतकों में होने वाले अभावों में उल्लेखनीय कमी आई है।

भारत का तीसरा चंद्र मिशन 'चंद्रयान-3' श्रीहरिकोटा से चंद्रमा की यात्रा पर रवाना

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने आंध्र प्रदेश स्थित श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण केंद्र से 14 जुलाई को एलवीएम3–एम4 रॉकेट के जरिए अपने तीसरे चंद्र मिशनकृ 'चंद्रयान–3' को प्रक्षेपित किया।

एलवीएम3–एम4 रॉकेट अपनी श्रेणी में सबसे बड़ा और भारी है। यह 'चंद्र मिशन' 2019 के 'चंद्रयान–2' का अनुवर्ती मिशन है। प्रक्षेपण देखने के लिए मौजूद हजारों दर्शक चंद्रयान–3 के रवाना होते ही खुशी से झूम उठे।

उल्लेखनीय है कि इसरो ने पूर्व में कहा था कि 'चंद्रयान–3' कार्यक्रम के तहत इसरो अपने चंद्र मॉड्यूल की मदद से चंद्र सतह पर 'सॉफ्ट–लैंडिंग' और चंद्र भूभाग पर रोवर के घूमने का प्रदर्शन करके नई सीमाएं पार करने जा रहा है। एलवीएम3एम4 रॉकेट को पूर्व में जीएसएलवीएमके3 कहा जाता था।

अगस्त के अंत में 'चंद्रयान–3' की 'सॉफ्ट लैंडिंग' की योजना बनाई गई है। उम्मीद है कि यह मिशन भविष्य के अंतरग्रही अभियानों के लिए सहायक होगा।

चंद्रयान–3 मिशन में एक स्वदेशी प्रणोदन मॉड्यूल, लैंडर मॉड्यूल और एक रोवर शामिल है जिसका उद्देश्य अंतर–ग्रहीय अभियानों के लिए आवश्यक नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करना और प्रदर्शित करना है।

यह मिशन; एलवीएम3 की चौथी अभियानगत उड़ान है, जिसका उद्देश्य 'चंद्रयान–3' को भू–समकालिक कक्षा में प्रक्षेपित करना है।

इसरो ने कहा कि एलवीएम3 रॉकेट ने कई उपग्रहों को प्रक्षेपित करने, अंतरग्रही अभियानों सहित अधिकतर जटिल अभियानों को पूरा करने करने की अपनी विशिष्टता साबित की है। इसने कहा कि यह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय ग्राहक उपग्रहों को ले जाने वाला सबसे बड़ा और भारी प्रक्षेपण यान भी है।

चंद्रयान-3 हमारे देश की आशाओं और सपनों को साकार करेगा: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 14 जुलाई को भारत के तीसरे चंद्र मिशन चंद्रयान–3 के महत्व का उल्लेख किया। ट्वीट की एक श्रृंखला में प्रधानमंत्री ने कहा कि जहां तक भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र का प्रश्न है; 14 जुलाई, 2023 हमेशा स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा। हमारा तीसरा चंद्र मिशन चंद्रयान–3 अपनी यात्रा का शुभारंभ करेगा। यह उल्लेखनीय मिशन हमारे देश की आशाओं और सपनों को आगे बढ़ाएगा।

उन्होंने कहा कि कक्षा में भेजने की प्रक्रिया के बाद चंद्रयान–3 को चंद्र स्थानांतरण प्रक्षेप पथ में भेजा जाएगा। 3,00,000 किमी से अधिक की दूरी तय करते हुए यह आने वाले हफ्तों में चंद्रमा पर पहुंचेगा। चंद्रयान पर मौजूद वैज्ञानिक उपकरण चंद्रमा की सतह का अध्ययन करेंगे और हमारे ज्ञान को बढ़ाएंगे।

श्री मोदी ने कहा कि हमारे वैज्ञानिकों को धन्यवाद; अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत का इतिहास बहुत समृद्ध है। चंद्रयान–1 को वैश्विक चंद्र मिशनों में एक पथ प्रदर्शक माना जाता है, क्योंकि इसने चंद्रमा पर जल के अणुओं की उपस्थिति की पुष्टि की है। यह दुनिया भर के 200 से अधिक वैज्ञानिक प्रकाशनों में प्रकाशित हुआ।

उन्होंने कहा कि चंद्रयान–1 तक चंद्रमा को एक पूर्ण रूप शुष्क, भूवैज्ञानिक रूप से निष्क्रिय और निर्जन खगोलीय पिंड माना जाता था। अब इसे जल और इसकी उप–सतह पर बर्फ की उपस्थिति के साथ एक गतिशील और भूवैज्ञानिक रूप से सक्रिय खगोलीय खंड के रूप में देखा जाता है। हो सकता है कि भविष्य में इस पर संभावित रूप से निवास किया जा सके।

श्री मोदी ने कहा कि चंद्रयान–2 भी उतना ही महत्वपूर्ण था, क्योंकि इससे जुड़े ऑर्बिटर के डेटा ने पहली बार रिमोट सेंसिंग के माध्यम से क्रोमियम, मैंगनीज और सोडियम की उपस्थिति का पता लगाया था। इससे चंद्रमा के मैगमैटिक विकास के बारे में अधिक जानकारी भी मिलेगी। उन्होंने कहा कि चंद्रयान–2 के प्रमुख वैज्ञानिक परिणामों में चंद्र सोडियम के लिए पहला वैश्विक मानचित्र, क्रेटर आकार वितरण पर उन्नत जानकारी, आईआईआरएस उपकरण के साथ चंद्र सतह पर जल से निर्मित बर्फ का स्पष्ट रूप से पता लगाना और बहुत कुछ शामिल है। यह मिशन लगभग 50 प्रकाशनों में प्रकाशित हुआ है। प्रधानमंत्री ने कहा कि चंद्रयान–3 मिशन के लिए शुभकामनाएं। मैं आप सभी से इस मिशन और अंतरिक्ष, विज्ञान एवं नवाचार में की गई देश की प्रगति के बारे में और अधिक जानने का आग्रह करता हूं। इससे आप सभी बेहद गौरवान्वित महसूस करेंगे।

भारत विभाजन विभीषिका का दंश

विभाजन भयावह स्मृति दिवस

14 अगस्त 1947 के पूर्व की भारतमाता के मानचित्र तथा उसको छांटनेवाले विश्वासघातियों का स्मरण हर भारतीय के लिए स्वाभाविक है। आज भी वे माँ के बँटने के अवसर पर हत्या, लूट, अत्याचार को देश भूल नहीं पाया है।

15 अगस्त को देश के स्वाधीनता की घोषणा करते हुये,हमारे प्रथम प्रधानमंत्री ने,लालकिले की प्राचीर से अपने सम्बोधन में कहा था, " आज हमारा अपनी नियति से मेल हुआ है " लेकिन यह मेल किस कीमत पर हुआ यह आज 76 वर्ष बाद भी विचारणीय है ?

13 अगस्त को सम्पूर्ण भारतमाता का जो मानचित्र था वह स्वाधीनता दिवस के दिन खण्डित हो गया था अपना बहुत कुछ पराया हो गया। महर्षि पाणिनि की जन्मस्थली, गुरुनानक की पावन जन्मभूमि ननकाना साहेब,हिंगलाज देवी के सहित 8 शक्तिपीठ, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, कटसराज का सरोवर जहाँ यक्ष ने पांडवों से प्रश्न पूछा थे भगत सिंह,सुखदेव और राजगुरु की समाधियाँ, रामजी के पुत्र लव का लाहौर और कुश का कुशूर, हमारे पंचनद यह सभी अपने नहीं रहे। लाहौर में रावी का वह तट जहाँ पंडित जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में कांग्रेस ने 1930 में संपूर्ण स्वराज का संकल्प लिया था वह तट भी स्वाधीनता का सूर्य उदित हुआ तो पराया हो गया था, ढाकेश्वरी देवी का मंदिर भी अपना नहीं रहा। अपनी 29% पावन भूमि उसमे स्थित 62 जिले, बलूचिस्तान,उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त, सिंध, पूर्वी बंगाल और पश्चिमी पंजाब से वंचित भारतमाता 15 अगस्त को स्वाधीन हुई।

देश का बंटवारा कोई तात्कालिक घटना नहीं थी, स्वाधीनता के बाद जिन्होंने देश की बागडोर संभाली और जिनके वैचारिक विरासत के उत्तराधिकारी अभी कुछ दिन पहले तक केन्द्र सरकार में शासनारूढ़ थे वे इस पाप के उत्तरदाई हैं।

कुछ ऐसे ज्वलंत प्रश्न हैं, जिनका उत्तर इन्हें ही देना ही होगा स्वाधीनता का अभी हमने अमृत महोत्सव मनाया है आज की पीढ़ी को भी इन अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर उनसे मांगना होगा जो अपने को स्वाधीनता आन्दोलन का एकमेव कर्ता मानते हैं। 1916 को वाराणसी के कांग्रेस अधिवेशन में हिन्दू–मुस्लिम पृथक निर्वाचन के प्रस्ताव को स्वीकृत कर विभाजन की आधारशिला रखने वाले आखिर कौन? खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करके "कीमत अदा करके" किसी समुदाय को देशभक्त बनाने की परंपरा प्रारंभ करने वाले कौन ?

1923 को काकीनाडा कांग्रेस अधिवेशन में मुस्लिम लीग की स्थापना में महती भूमिका निभाने वाले मोहम्मद अली जौहर की अध्यक्षता में अधिवेशन करके उनके द्वारा

अधिवेशन में वन्दे मातरम के गायन का विरोध करने पर,जिन पंक्तियों का उन्होंने विरोध किया,बाद में उसे वन्दे मातरम गीत से विलोपित करने का निकृष्टतम कृत्य करने वाले कौन ? 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे अल्लामा इकबाल जिन्होंने पहली बार उस अधिवेशन में अलग मुस्लिम देश का प्रस्ताव रखा उस इकबाल को देशभक्ति गीत के अमर रचनाकार के रूप में आजतक देश में प्रतिष्ठित करने वाले कौन ?

किसने मुस्लिम लीग के जिन्ना की अध्यक्षता में 1940 के लाहोर अधिवेशन में पाकिस्तान की मांग के स्पष्ट प्रस्ताव के बाद भी देश को आश्वस्त किया था कि" देश का बंटवारा हमारी लाश पर होगा" ?

कालांतर पूरे देश में डायरेक्ट एक्शन के तहत मुसलमानों ने हिन्दुओं का कत्लेआम किया,जिसके दबाव में तुरंत सत्ताप्राप्ति की जल्दबाजी में किसने देश का बंटवारा स्वीकार किया ? देश के बटवारे में 10 लाख हिन्दुओं की हत्या, 1.5 करोड़ हिन्दुओं के विस्थापन असंख्य हिन्दू माताओं बहनों के मानभंग के पापी कौन ? 14% मुस्लिम आबादी, और 29% मातृभूमि का पवित्र भूभाग पकिस्तान के नाम पर देने का पाप किसने किया ? किन्होंने भारत में शेष बचे मुसलमानों को तो विशेषाधिकार दिये लेकिन पकिस्तान में बचे हुए हिन्दुओं को उनके भाग्य पर छोड़ दिया ? स्वतंत्रता के बाद केरल में देश का बंटवारा करानेवाली मुस्लिम लीग के सहयोग से सरकार चलाकर किन्होंने उन्हें अपराधबोध से मुक्त कर देश की राजनीति के मूलधारा में लाने का पाप किया ? धारा 370 के आधार पर कश्मीर को विशेष दर्जे देने वाले, एक ही देश में दो विधान दो निशान कायम करने के अपराधी कौन थे ? सत्ता के लिए 4 करोड़ से अधिक

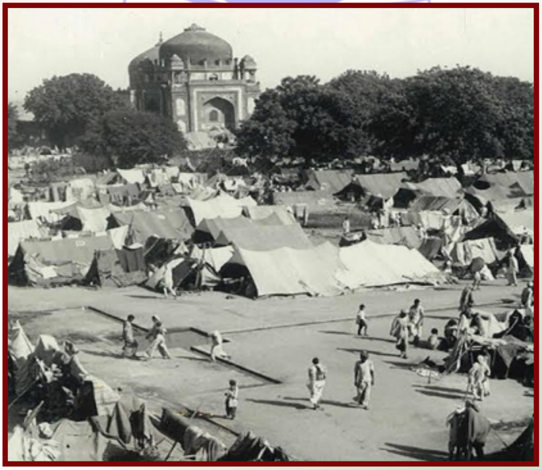

बांग्लादेशी घुसपैठियों को देश में अतिथि का सम्मान देने वाले अपराधी कौन? अली और कुली का नारा देने वाले कौन?

किसके वरदहस्त से इसाई मिशनरीज की प्रेरणा से उत्तरपूर्वांचल में अराष्ट्रीय गतिविधियाँ चला रही हैं? प्रदेश देश से अलग होकर पाकिस्तान बने आज 65% मुस्लिम आबादी का कश्मीर,98% मुस्लिम आबादी का लक्षद्वीप मुस्लिम बाहुल्य प्रदेश है,38% मुस्लिम आबादी का असम, 26% मुस्लिम आबादी का पश्चिम बंगाल, 25% मुस्लिम आबादी का केरल ,18% मुस्लिम आबादी का बिहार,19.4% मुस्लिम आबादी वाला उत्तर प्रदेश, इसके कारक दो विधान घुसपैठ के जनक और समर्थक कौन ? आज देश के 640 जिलों में 110 जिलों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गया है।

1914 में गांधीजी के भारतीय राजनीति में आगमन के बाद तथाकथित धर्मनिरपेक्षता के विषाणु से इस देश की राजनीति संक्रमित हुई ,कालांतर उसी के कारण देश के बंटवारा हुआ,वही विषाणु आज उससे भी घातक स्वरुप में यहाँ के अधिकांश राजनैतिक दलों में विद्यमान हैं। 1916 के लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस का जो देशघाती स्वरुप प्रकट हुआ था,उसके पापों की श्रृंखला कालांतर इतनी बढ़ती ही गई वर्तमान पीढ़ी को इन सभी बातों से अवगत कराना और ऐसे विषैले तत्वों के विरुद्ध उन्हें खड़ा करना आज का युगधर्म है। स्वाधीनता दिवस के पावन पर्व पर हम सबको अटल जी की इन कालजयी पंक्तियों को सदैव स्मरण रखना होगा। 15 अगस्त का दिन कहता आज़ादी अभी अधूरी है, सपने सच होनें बाकी हैं रावी की शपथ न पूरी है। विभाजन की विभिषिका को भारत वासी अभी भूले नहीं हैं। सांस्कृतिक राष्ट्र की हमारी अवधारणा एक दिन निश्चित पुनः पूर्णता को प्राप्त करेगी।

परम सुख का मार्ग

मनुष्य की सभी क्रियाओं का उद्देश्य एक ही हैकृआनंद अथवा सुख की प्राप्ति। वैसे तो संपूर्ण सृष्टि ही आनंदमय है। प्रत्येक प्राणी वही कार्य करता है, जो उसके लिए सुखकारक है। प्राणी ही क्यों, जड़ पदार्थों में भी जितना कुछ होता है, वह सभी आनंद प्राप्ति के लिए है। संपूर्ण चराचर सृष्टि में एक ही आनंद का नाम गुंजित हो रहा है। साधारण जीवधारी अन्य प्राणी भी सुख के लिए ही क्रियाएं करते हैं। कुत्ते को डंडा दिखाया तो वह भागता है और रोटी दिखाई तो वह समीप आता है। एक समय भागने और दूसरे समय समीप आने की यह क्रिया उसकी सुख कामना ही है। तब मनुष्य तो विकसित प्राणी है। इसलिए इस संबंध में कोई विशेष तर्क देने की आवश्यकता नहीं है कि मनुष्य की समस्त क्रियाओं का उद्देश्य सुख प्राप्ति ही है।

विचारणीय प्रश्न है कि सुख क्या है? इस संबंध में मनोविज्ञान शास्त्र के विद्वानों ने एक प्रयोग किया। एक ऐसी परखनली के एक रास्ते के छोर पर एक कीड़ा रख दिया। शेष बचे दो रास्तों में से बाईं ओर से रास्ते पर बिजली का करंट जोड़ दिया। यह कीड़ा आगे बढ़कर जब बाईं ओर जाता था तो उसे बिजली के प्रवाह का धक्का लगता था। वह वापस आता था। बार–बार उस कीड़े ने बिजली का धक्का खाया और दाहिनी ओर के रास्ते पर मुड़ा। दस–बारह बार ऐसा होने पर उस कीड़े ने बाईं ओर के रास्ते पर जाना ही बंद कर दिया। जब परखनली के एक रास्ते के छोर पर उसे छोड़ा जाता, तो वह सावधानी से बाईं ओर का रास्ता छोड़कर दाहिनी ओर आगे बढ़ता। वैज्ञानिकों ने इस पर से निष्कर्ष निकाला कि अनुकूल वेदना ही सुख है। सर्वसाधारण प्राणिमात्र की यही प्रकृति है, सुख की ओर बढ़ना और दुःख से दूर हटना है।

किंतु इस सुख की अनुभूतियों में भी बड़ा अंतर है। सुख की अनुभूतियां भिन्न–भिन्न प्रकार की होती हैं। मनुष्य को भोजन करने, पानी पीने, ठंड, गरमी, वर्षा से शरीर को बचाने, सुगंधित पुष्प की गंध लेने, रंग–बिरंगे दृश्यों का अवलोकन करने कितनी ही प्रकार की अनुभूतियां होती हैं। वह इनमें आनंद का अनुभव करता है। वे इंद्रियजन्य सुख हैं। इंद्रियों से इनका उपभोग किया जाता है। इन सुखों के संबंध में हमारे यहां कहा गया है कि ये मनुष्य तथा अन्य प्राणियों में समान ही होते हैं। आहार, निद्रा, भय, मैथुन आदि से जो अनुकूल वेदना होती है, उसे मनुष्य और पशु में समान पाया जानेवाला सुख कहा गया है।

मनुष्य और पशु में अंतर केवल यही है कि मनुष्य का कुछ–न–कुछ जीवन लक्ष्य होता है। पशु का लक्ष्य नहीं होता। लक्ष्य ही मनुष्य में मनुष्यत्व समझा जाता है। लक्ष्यहीन मनुष्य तो निरा पशु ही है। इस लक्ष्य के कारण ही मनुष्य की विशेषता है। इसलिए इंद्रिय तथा उनके विषयों के संयोग से प्राप्त सुख को मनुष्य के लिए राजस सुख माना गया है। यह इंद्रियजन्य सुख क्षणिक होता है। किंतु यह सुख भी कई बार फीका लगता है।

एक कम्युनिस्ट ने अपने एक मित्र से अत्यंत ही आग्रहपूर्वक कहा कि दुनिया में सबसे बड़ा सवाल रोटी का है। मित्र ने उससे पूछा कि क्या दुनिया का सबसे बड़ा सवाल यही मानते हो? उसने जब हां कहा तो मित्र बोला कि ठीक है, मैं इसे सुलझाऊंगा। कल से मेरे घर आना आपको रोज भरपेट स्वादिष्ट भोजन कराऊंगा। किंतु एक शर्त है कि रोज शाम को इसी स्थान पर खड़ा कर चार जूते भी लगाऊंगा। कम्युनिस्ट सज्जन द्वारा इसका कारण पूछने पर मित्र ने कहा, इसमें आपका क्या बिगड़ता है? आपका सवाल रोटी का है। वह पूरा होना चाहिए। यह दूसरा सवाल मेरा है, इसे मुझ पर छोड़ दो। इस विनोद में भी बड़ा महत्त्वपूर्ण रहस्य छिपा है। रहस्य यह है

कि सुख इंद्रियों तक ही सीमित नहीं है। इसका संबंध किसी अन्य वस्तु से भी है।

एक सज्जन नासिक जाकर तर्पण कर रहे थे। उनके एक मित्र भी साथ थे, जिनका तर्पण में विश्वास नहीं था। इसलिए उन्होंने मजाक करते हुए कहा कि यह क्या कर हो हो ? उक्त सज्जन ने कहा कि पितरों को पानी दे रहा हूं। मित्र ने पूछा, भला यहां दिया हुआ पानी उन्हें किस प्रकार मिलेगा? तो उक्त सज्जन ने इसका बिना कुछ उत्तर दिए मित्र के पिताजी को ज़ोर–ज़ोर से गाली देना शुरू कर दिया। इस पर मित्र भी बहुत क्रोधित हो उठा। वह बोला, यदि तुम्हें तर्क नहीं सूझता तो मुझे गाली दे दो, मेरे पिता को गाली देना मैं सहन नहीं कर सकता। तब उक्त सज्जन ने शांत भाव से कहा, "मित्र, तुम्हारे पिता तो घर पर हैं, यहां दी हुई गालियां उनके पास तक तो नहीं पहुंच सकतीं। तब व्यर्थ में क्यों उत्तेजित होकर चिंता करते हो?" इस प्रकार मित्र को प्रश्न का सही उत्तर मिल गया था कि यह सब मन को अच्छा लगने की बात है। भावना का प्रश्न है।

उद्धव चरित में कहा गया है, "उद्धव मन माने की बात।" गोपियों को उद्धव समझाने लगे तो गोपियों ने इनकार कर दिया। वे बोलीं कि भाई, यह अपने–अपने मन का प्रश्न है। हम निराकार निर्गुण की आराधना करके प्रसन्न नहीं हो सकतीं। हमें तो हमारा खेलने–कूदने, लीला करनेवाला कृष्ण ही चाहिए। इसलिए केवल इंद्रियजन्य सुख से काम नहीं चलता, मन का भी सुख ज़रूरी होता है। अन्यथा सामने थाली में रखा हुआ स्वादिष्ट भोजन भी विष के समान लगने लगता है और व्यक्ति उसे ठोकर मारकर उठ जाता है।

इसके साथ मनुष्य के पास बुद्धि भी है। वह चिंतन करता है। चिंतन का भी सुख है। अन्य प्राणियों के पास इतनी विकसित बुद्धि नहीं, जितनी मनुष्य के पास है। वह क्षणिक और शाश्वत सुख के भेद को समझना चाहता है। कौन सा सुख स्थायी एवं चिरंतन होगा, जो अधिक समय तक मिलता रहेगा और कौन सा सुख क्षणिक एवं परिणाम में महान् दुःखदायी होगा? इसका विचार मनुष्य कर लेना चाहता है। वह विवेक का प्रयोग करने लगता है। व्यक्ति सोचता है कि हीरा छोड़कर कांच का टुकड़ा क्यों ले? जिस मुख से अमृत चख लिया, उसमें करील के कड़वे फल क्यों डाले? इसलिए वह बुद्धि का भी सुख चाहता है। जीवन लक्ष्य, जिसे अपनी बुद्धि द्वारा स्वयं स्वीकृत किया है, उसके सुख–दुःख की वेदनाओं का निकष बनता है। लक्ष्य की ओर बढ़ते समय मार्ग के कांटे भी उसे सुखकर लगते हैं। सत्य के लिए वह लाख कष्ट झेलने में आनंद का अनुभव करता है। अपनी मान्यताओं को स्थापित करने के लिए वह चाहे जिस वस्तु का त्याग कर सकता है। केवल मन का सुख उसे संतुष्ट नहीं कर पाता। मन तो चंचल है हजार प्रकार की बातों में रमते रहने का काम मन का है। इस मन को वश में कर एकाग्र करने से मनुष्य लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है। इसलिए उसे बुद्धि का सुख भी अनुभव होता है। गोस्वामी तुलसीदासजी के संबंध में ऐसी ही एक शिक्षाप्रद कथा है। वे अपनी पत्नी को इतना अधिक चाहते थे कि उसके बिना रह नहीं सकते थे। एक बार पत्नी अपने पिता के घर गई। मोह–अवस्था में व्याकुल होकर तुलसीदासजी भी भागे–भागे ससुराल पहुंच गए। कहा जाता है कि वर्षा के दिन थे, नदी उफन रही थी तो उसमें बहते हुए एक मुरदे को ही पकड़कर वे नदी पार हो गए। इधर ससुराल पहुंचने पर दरवाजे बंद थे तो खिड़की से लटकते हुए एक सांप को रस्सी मानकर पकड़ अंदर पहुंच गए। पत्नी को जगाया। पत्नी ने उन्हें धिक्कारा। बस, तब उनके मन के ऊपर छाया हुआ मोह छंट गया। बुद्धि ने प्रकाश पाया। सचमुच पत्नी के इन शब्दों में बड़ा सुख भरा हुआ दिखाई दिया कि हाड़–मांस के इस शरीर से इतना प्यार करते हो, वैसा ही यदि श्री रघुवीर के प्रति होता तो कल्याण हो जाता। वे इस सुख की ओर बढ़े और रामचरित मानस की रचना कर अपार आनंद को प्राप्त हुए।

तथापि बुद्धि का सुख भी अंतिम चिरानंद सुख नहीं है। बुद्धि से भी ऊपर आत्मा का सुख है। मां बच्चे को गोद में लेकर आत्मिक सुख का अनुभव करती है। यह आत्मा की विशालता का सुख है। इसके सामने अन्य सभी सुख तुच्छ हैं। भयमुक्त और स्वार्थमुक्त होने पर सिवाय आनंद के अन्य कुछ रह ही नहीं जाता। इसलिए व्यक्ति इसकी खोज में विशालता स्वीकार करता जाता है।

इस प्रकार शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा चारों प्रकार के सुख की प्राप्ति ही जीवन लक्ष्य है।

तथापि इस सुख की प्राप्ति कोई भी मानव अकेले नहीं कर सकता। स्वयं के परिश्रम से वह पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। इसके लिए समाज के साथ उसके संबंधों का प्रश्न आ उपस्थित होता है। जैसे हम जो भोजन करते हैं, वह केवल हमारे परिश्रम का ही फल नहीं है। अनेक बंधुओं का उसमें सहयोग है। रोटी पकानेवाले रसोइए से लेकर, दुकानदार, मंडी के नौकर–चाकर और किसान तक कितने ही लोग हैं, जो हमारे सुख के लिए कारण बने हैं। इसी प्रकार हमारे प्रत्येक सुख में अनेक लोगों का हाथ है।

इतना ही क्यों, यदि समस्त सुखोपयोग के साधन हों और व्यक्ति अकेला हो, तो भी वह दुःखी हो उठता है। कभी–कभी बहुत साधन संपन्न लोगों के मुंह से निकली हुई यह आह सुनी होगी कि "भाई, सब कुछ है किंतु इसका क्या उपयोग? हृदय भारी रहता है कि कोई अपना हो तो इसका उपभोग करे।" इसलिए सुख के लिए परोपकार का बड़ा यश गाया है। आपस में एक–दूसरे के साथ समरस होना, काम आना, आत्मीय जनों को सुख पहुंचाने का यत्न करना ही परोपकार है। यही परस्परानुकूलता है।

व्यक्ति जीवन में इस सुख की प्राप्ति के लिए चार बातों की आवश्यकता है- शिक्षा, स्वतंत्रता, शांति और पौरुष।

जब एक दूसरे सभी आपस में सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सचेत होते हैं तो आनंद नाच उठता है।

इसलिए सुख का आधार परस्परानुकूलता है, संघर्ष नहीं अपने–अपने मुख की कामना पर संघर्ष करने से ईर्ष्या पूर्ण प्रतिद्वंद्विता तैयार होती है। उसमें सुख का आभास भले ही निर्माण हो, तैयार होता है दुःख। इसीलिए कहा गया है कि सुख आत्मनिष्ठ हैं, वस्तुनिष्ठ नहीं। किसी वस्तु में सुख होता तो वस्तु पास में रहने तक सदैव सुख ही देती रहती। किंतु हम अनेक बार पाते हैं कि जो वस्तु सुखकर लगती थी, वही कुछ कारण से अब दुःख देने लगी है, इसलिए सुख आत्मनिष्ठ है, जिसका आधार परस्परानुकूलता है।

सृष्टि का भी सब व्यवहार इसी प्रकार आपस की पूरकता में से ही प्रकट होता है। समुद्र की भाप ऊपर उठकर बादल बनती है, बादल घुमड़–घुमड़कर बरस जाते हैं। नदियां उफनती हैं और फिर समुद्र में जा मिलती हैं। यही आनंद है। व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि, ये चार तत्व हमारे सामने उपस्थित होते हैं, जो परस्पर सहकार्य से सुखदायी होते हैं। व्यक्ति समाज पर अवलंबित है, समाज सृष्टि पर निर्भर है और सृष्टि का संचालन परमेष्टी द्वारा हो रहा है। व्यक्ति उसे परमेष्टि की इच्छा की पूर्ति का साधन बनाने में धन्यता अनुभव करता है। जब तक इनमें परस्पर तालमेल बना है, सबकुछ ठीक चलता है।

यही यज्ञचक्र कहा गया है। भगवद्गीता में कहा गया है कि प्राणी अन्न से, अन्न पर्जन्य से, पर्जन्य यज्ञ से और यज्ञ ब्रह्मा से निर्मित हुए हैं। इस तरह का चक्र पूर्ण होता बताया गया है। यह अखंड चक्र ही सब सुखों की धारणा करता है। इसे ही हमने दूसरे शब्दों में धर्म नाम से जाना है। अर्थात् परस्पर कर्तव्य करने से धारणा रूप जो धर्म प्रकट होता है, वही सुख है।

व्यक्ति जीवन में इस सुख की प्राप्ति के लिए चार बातों की आवश्यकता है– शिक्षा, स्वतंत्रता, शांति और पौरुष।

जिस यज्ञचक्र का उल्लेख ऊपर किया गया है, उसे व्यवस्था के साथ और निष्ठापूर्वक संचालित बनाए रखने के लिए शिक्षा की जरूरत है। सब प्रकार की शिक्षा व्यक्ति को देने की व्यवस्था समाज में होनी चाहिए। किंतु यह तभी संभव है कि जब व्यक्ति तथा समाज का जीवन स्वतंत्र हो। मानसिक स्वतंत्रता ही नहीं, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता भी जरूरी है। जाति चिति के अभियान प्रबल रहने से ही यह स्वतंत्रता रह सकती है। जहां स्वाभिमान नहीं, वहां स्वतंत्रता भी नहीं रह सकती। इनके लिए शक्ति और पौरुष की भी आवश्यकता है। इन चारों साधन चतुष्ट्य का निर्माण तथा संरक्षण करने के कार्य के लिए सक्षम सत्ताओं की रचना होती है। स्वतंत्रता रक्षण के लिए राज्य, शिक्षण के लिए गुरुकुल, अन्य सब प्रकार की शांति और पौरुष निर्माण के लिए समाज की चातुर्वर्ण्य व्यवस्था है।

प्रत्येक व्यक्ति को सक्षम बनाने के लिए चार आश्रम हैं। इस प्रकार चतुविध वर्णाश्रम के आधार पर, चतुर्विध साधनों के सहारे, चतुर्विध सिद्धांत को लेकर परमसुख की प्राप्ति का व्यावहारिक ढांचा खड़ा किया गया। ये सब साधन चिति से ही साध्य होते हैं। इसलिए राष्ट्र को चैतन्य प्रदान करना ही सब कार्यों की मूल प्रेरणा है। राष्ट्र का चैतन्य निर्माण होने से ये सब कार्य संपन्न होते हैं।

राष्ट्र जीवन की दिशा (पुस्तक), 1971

मोदी स्टोरी

नरेन्द्र मोदीजी के लिए हर मिनट मायने रखता है

— रणधीर शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का समय प्रबंधन उन्हें प्रत्येक उपलब्ध मिनट का अधिकतम उपयोग करने की अनुमति देता है। समय-समय पर हम प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा देश की सेवा में अपने समय का सदुपयोग करने के उदाहरण देखते हैं। चाहे वह उनकी विदेश यात्राएं हों, जहां वह उड़ान के दौरान अपने विमान में सोते हैं और बाकी समय अपनी बैठकों में बिताते हैं या प्रधानमंत्री कार्यालय में उनके कामकाजी घंटे जहां वह दिन में 18 घंटे काम करते हैं।

लेकिन इन उदाहरणों का मतलब यह नहीं है कि उन्होंने यह आदत हाल ही में विकसित की है। श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शुरुआती दिनों से ही समय को हमेशा महत्व दिया है। उनका मानना है कि बर्बाद किया गया हर मिनट राष्ट्र के प्रति अहित है।

यह लेख उनके समय के सर्वोत्तम उपयोग का एक उदाहरण है। यह घटना वर्ष 1996 की है जब उन्होंने भाजपा के प्रदेश प्रभारी के रूप में हिमाचल प्रदेश का दौरा किया था।

हिमाचल प्रदेश के विधायक श्री रणधीर शर्मा उस यात्रा को याद करते हैं। उन्हें कालका स्टेशन पर श्री नरेन्द्र मोदी के स्वागत की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उन्होंने कालका से श्री मोदी की अगवानी की और उन्हें परवाणू के पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस ले गये।

श्री नरेन्द्र मोदी शौचालय से वापस आए और उनसे पूछा कि गीजर चालू नहीं है। श्री शर्मा ने जवाब दिया कि वह इसे अभी चालू कर देंगे लेकिन श्री मोदी ने कहा कि उन्होंने इसे पहले ही चालू कर दिया है।

चर्चा जारी रखते हुए श्री मोदी ने कहा कि जब श्री शर्मा उन्हें लेने के लिए स्टेशन जा रहे थे तो उन्हें गीजर चालू कर देना चाहिए था। श्री शर्मा ने जवाब दिया कि 15-20 मिनट के अंदर गर्म पानी मिल जायेगा।

श्री शर्मा को आश्चर्य हुआ जब श्री नरेन्द्र मोदी ने उनसे पूछा, वे उन 15-20 मिनटों में क्या करेंगे?

श्री मोदी ने कहा, जब आप स्टेशन के लिए निकले तो आपको गीजर चालू कर देना चाहिए था, अब तक गर्म पानी उपलब्ध हो गया होता और हम बिना समय बर्बाद किए शिमला के लिए आगे बढ़ सकते थे।

जब वे शिमला पहुंच रहे थे, श्री मोदी ने श्री शर्मा से एक कार्यकर्ता को फोन करने और हमारे वहां पहुंचने तक समाचार पत्र उपलब्ध कराने के लिए कहा।

उन्होंने उन्हे यह भी सुझाव दिया कि किसी को पहले से चाय तैयार करने के लिए भी कहें ताकि समय बर्बाद न हो।

श्री मोदी उस समय भी दाढ़ी रखते थे। श्री शर्मा ने एक बार उनसे दाढ़ी रखने का कारण पूछा था। श्री नरेन्द्र मोदी ने जवाब दिया कि दाढ़ी बनाने में रोजाना कम से कम 15 मिनट का समय लगता है और वहीं आप महीने में एक बार 5 मिनट में अपनी दाढ़ी ट्रिम कर सकते हैं।

फिर उन्होंने कहा कि क्या आप सोच सकते हैं कि अगर आप हर दिन 15 मिनट शेविंग में बर्बाद करते हैं, तो एक महीने में कितना समय बर्बाद होता है।

इन घटनाओं को याद करते हुए श्री शर्मा कहते हैं, समय का सर्वोत्तम उपयोग करने की क्षमता श्री नरेन्द्र मोदी का एक विशेष गुण है। ■

कमल पुष्प

सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

स्वर्गीय श्री जुपुड़ी यज्ञ नारायण

आंध्र प्रदेश के कटिवरम गांव के स्वर्गीय श्री जुपुड़ी यज्ञ नारायण बहुत कम उम्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हुए थे। संघ के साथ उनके जुड़ाव ने उन्हें जनसंघ में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, जहां उन्होंने जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पदों पर अपने दायित्व का निर्वहन किया। आपातकाल के दौरान उन्हें मीसा बंदी के रूप में जेल में डाल दिया गया था। उन्होंने 1971-73 के दौरान जय आंध्र आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने प्रदेश में जनसंघ, जनता पार्टी और भाजपा को स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। श्री नारायण एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति और एक सफल वकील, बुद्धिजीवी, अच्छे वक्ता, कलाकार और खिलाड़ी थे। ■

स्वर्गीय श्री जुपुड़ी यज्ञ नारायण

सक्रिय वर्ष 1952-1994
जिला - गुंटुर,
आंध्रप्रदेश

सर्वोत्कृष्ट कार्यकर्ता स्व0 मदनदास देवी

"कुछ दिनों पहले, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के वरिष्ठ प्रचारक मदन दास देवी जी के हुए देहावसान से मुझे और लाखों कार्यकर्ताओं को जो आघात पहुंचा है, उसके लिए कोई शब्द नहीं हैं। मदनदास जी जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं रहे। इस चुनौतीपूर्ण सच्चाई को स्वीकारना कठिन है, लेकिन इस बोध से सांत्वना मिलती है कि उनसे जो सीख मिली है और उनके आदर्श रहे हैं, हमारी आगे की यात्रा में मार्गदर्शक के रूप में काम करते रहेंगे।

मदन दास जी के साथ मुझे वर्षों तक निकटता से काम करने का सौभाग्य मिला. मैंने उनकी सादगी और मृदुभाषी स्वभाव को बहुत करीब से देखा है। वह सर्वोत्कृष्ट संगठनकर्ता थे. संगठन में काम करते हुए मैंने भी काफी समय उनके साथ बिताया है। ऐसे में स्वाभाविक ही है कि संगठन के संवर्धन और कार्यकर्ताओं के विकास से जुड़े पहलू नियमित रूप से हमारी बातचीत में शामिल होते रहे। ऐसे ही एक चर्चा के दौरान, मैंने उनसे पूछ लिया कि वह कहां के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि वैसे तो वह महाराष्ट्र के सोलापुर के पास के एक गांव के हैं, लेकिन उनके पूर्वज गुजरात से आए थे। लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम था कि वे किस गांव से आए थे। मैंने उन्हें बताया कि मेरे एक शिक्षक थे जिनका सरनेम देवी था और वे विसनगर के रहने वाले थे. बाद में, वह विसनगर और वडनगर भी गए। हमारी बातचीत भी उनसे गुजराती में होती थी।

नरेन्द्र मोदी

मदन दास जी में अनेक विशिष्टताएं थीं। उन विशेषताओं एक खासियत यह भी थी कि शब्दों से आगे जाकर उन शब्दों के पीछे की भावनाओं को समझने की क्षमता। मृदु–भाषी और हमेशा मुस्कुराते रहने वाले, मदन दास जी घंटों की लम्बी चर्चाओं को संक्षेप में और कुछ ही वाक्यों में प्रस्तुत कर सकते थे।

मदन दास जी की जीवनयात्रा के पहलू विस्मयकारी हैं और उन पहलुओं को कोई इंसान तभी हासिल कर सकता है जब उसने खुद को पीछे रख दिया हो और समूह को आगे किया हो। उन्होंने चार्टर्ड अकाउंटेंट होने के बावजूद संघ कार्य को महत्व दिया। वह आराम का जीवन जी सकते थे, लेकिन उनका उद्देश्य कुछ और था– भारत के विकास के लिए काम करने में।

मदन दास जी को भारत के युवाओं पर बहुत विश्वास था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को मजबूत करने में खुद को झोंक दिया। इस यात्रा में वह जिन लोगों से प्रभावित रहे, उनमें से एक थे यशवंतराव केलकर जी। वह उनसे बहुत प्रेरित थे और अक्सर उनके बारे में बात करते थे। मदन दास जी ने विद्यार्थी परिषद के काम में अधिक से अधिक छात्राओं को शामिल करने और उन्हें एक मंच प्रदान करके सशक्त बनाने पर जोर दिया ताकि वे समाज कल्याण में योगदान दे सकें। वह अक्सर कहा करते थे कि छात्राएं जब किसी

सामूहिक प्रयास में शामिल होंगी तो वह प्रयास हमेशा ही ज्यादा संवेदनशील बनकर उभरेगा। विद्यार्थियों के प्रति स्नेह उनके लिए अन्य सभी चीजों से ऊपर था। उनका वह हर समय छात्रों के बीच रहे, लेकिन पानी में कमल की तरह।

मैं ऐसे कई नेताओं को जानता हूं जिन्होंने अपना जीवन मदन दास जी के मार्गदर्शन में शुरू किया। युवावस्था के दौरान उनका उत्थान मदन दास जी से मिले मार्गदर्शन की वजह से हुआ लेकिन इसे लेकर बड़े–बड़े दावे करना उनके स्वभाव में कभी नहीं रहा।

आजकल, जन–प्रबंधन, प्रतिभा– प्रबंधन और कौशल प्रबंधन की अवधारणाएं बेहद लोकप्रिय हो गई हैं। लोगों को समझने और उनकी प्रतिभा को संगठनात्मक लक्ष्यों पर आधारित करने में मदन दास जी को विशेषज्ञता जग–जाहिर थी। वह विशिष्ट थे क्योंकि वह लोगों की क्षमताओं को समझते थे और उसकी क्षमता के आधार पर ही उसे काम सौंपते थे। वह इस बात के पक्षधर नहीं थे कि लोगों को उनकी जरूरत के हिसाब से जिम्मेदारी सौंपी जाए। यही वजह है कि किसी भी युवा कार्यकर्ता के पास यदि कोई नया विचार होता तो मदन दास जी उसकी आवाज को आगे करते थे। यही वह मूल वजह है कि जिसकी वजह से उनके साथ काम करने वाले बहुत से लोग अपनी क्षमता के आधार पर अलग छाप छोड़ने के लिए स्व–प्रेरित हुए। इसीलिए, संगठन का उनके नेतृत्व में लगातार विस्तार होता गया।

यह कहने की जरूरत नहीं कि मदन दास जी को संगठन के काम से यात्राएं बहुत करनी पड़ती थी और उनका व्यस्त कार्यक्रम होता था। लेकिन बैठकों के लिए वह हमेशा अच्छी तरह तैयार रहते थे। उनकी कार्यसूची हमेशा सरल होती थी, बोझिल नहीं, किसी कार्यकर्ता पर बोझ भी नहीं। उनकी यह खासियत अंत तक उनमें अभिन्न रूप से बनी रही। अपनी लम्बी बीमारियों का उन्होंने डटकर सामना किया। जब भी मैं उनसे पूछता था तो कई बार पूछने के बाद ही वह बीमारी के बारे में बात करते थे. शारीरिक तकलीफों के बावजूद वह खुश रहे। बीमारी की हालत में भी वे लगातार यही सोचते रहते थे कि देश और समाज के लिए वे क्या कर सकते हैं।

मदन दास जी का शानदार एकेडमिक रिकॉर्ड था और उनके काम में यह परिलक्षित भी हुआ। एक उत्साही पाठक, जब भी कुछ अच्छा पढ़ता है तो वह उस सामग्री को उस क्षेत्र में काम करने वाले संबंधित व्यक्ति को भेज देता है। मुझे भी अक्सर ऐसी सामग्री हासिल करने का सौभाग्य मिला है। उन्हें अर्थशास्त्र और नीतिगत मामलों की भी अच्छी समझ थी। उन्होंने एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जहां कोई भी व्यक्ति दूसरों पर निर्भर न हो और जहां प्रत्येक व्यक्ति आत्मसुधार और विकास के अवसरों से सशक्त होकर अपने पैरों पर खड़ा हो सके। मदन दास जी ने एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जहां आत्मनिर्भरता केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि हर नागरिक के लिए जीवंत वास्तविकता हो। ऐसा समाज हो जो पारस्परिक सम्मान, सशक्तिकरण और साझा समृद्धि के सिद्धांतों पर आधारित हो। अब, जैसे–जैसे भारत विभिन्न क्षेत्रों में अधिक से अधिक आत्मनिर्भर होता जा रहा है, उनसे अधिक खुश और कोई नहीं होगा।

आज, जब हमारा लोकतंत्र जीवंत है, युवा आश्वस्त हैं, समाज दूरदर्शी है, और राष्ट्र आशा और विश्वास से भरा हुआ है, मदन दास देवी जी जैसे लोगों को स्मरण करना महत्वपूर्ण हो जाता है जिन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्र की सेवा के लिए और राष्ट्र को उन्नति पथ पर ले जाने के लिए समर्पित कर दिया. उनका उद्देश्य था भारत के विकास के लिए काम करना।"

श्रद्धांजलि

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी व प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने भाजपा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ नेता, सीतापुर के पूर्व जनप्रिय लोकसभा सांसद एवं अवध क्षेत्र के पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री जनार्दन मिश्रा जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सीतापुर के पूर्व लोकसभा सांसद श्रद्धेय श्री जनार्दन मिश्रा जी के जनपद सीतापुर में हरगांव स्थित आवास पर पहुंचकर पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की एवं शोकाकुल परिजनों से भेंट कर शोक संवेदना व्यक्त की।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ नेता, सीतापुर के पूर्व लोकप्रिय सांसद एवं अवध क्षेत्र के पूर्व अध्यक्ष श्री जनार्दन मिश्रा जी का निधन अत्यंत दुखदायी है। हृदय को असहनीय पीड़ा देने वाले दुःख की इस विपदा में ईश्वर से विनयपूर्ण प्रार्थना करता हूं कि गोलोकवासी पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

प्रदेश महामंत्री गोविन्द नारायण शुक्ला, प्रदेश मुख्यालय प्रभारी भारत दीक्षित, अशोक तिवारी तथा क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रा सहित बड़ी संख्या में भाजपा के नेता व कार्यकर्ताओं ने श्रद्धेय जनार्दन मिश्रा जी के आवास पर पहुंचकर पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारत माता
ला पंचायत
सदस्य
शिक्षण वर्ग

भारतीय जनता पार्टी
लोक सभा प्रवास योजना

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
अगस्त प्रथम 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।